## प्रथम अध्याय

# अमृतलाल नागर : व्यक्तित्वं एवं कृतित्व का परिचय

### 1. जीवन परिचय :-

अमृतलाल नागर हिंदी के मूर्धन्य उपन्यासकार हैं । वे असाधारण प्रतिभा के धनी हैं । उनमें कथा कहने की अद्‌भूत क्षमता हैं तथा उनकी वर्णनकुशलता असंदिग्ध हैं । वे जागरूक इतिहास-पुरान-प्रेमी, तथा प्रगतिशील विचारक हैं । उनके उपन्यासों में समाज के प्रत्येक वर्ग का चित्रण किया गया हैं । उनकी सहानुभूति पूरे समाज के साथ हैं । परिणामतः वे समग्रतावादी कलाकार माने जाते हैं । वे कुशल शब्दशिल्पी, भाषा और नूतन अप्रस्तुत विधान के पारखी हैं ।

किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अनुशीलन करना हो, तो उसके जीवन पर प्रकाश डालना आवश्यक है । उपन्यासकार मानव जीवन के किसी विशिष्ट पहलू को स्पष्ट करने के लिए एक ऐसी घटना-श्रृंखला को जन्म देता है, जिससे वह पहलू अधिक तेजोमय और प्रभावशाली बन सके । साहित्यकार अपने साहित्य सृजन की सामग्री जीवन और जगत् से ही ग्रहण करता है । एक साथ नौ विधाओं में साहित्य सृजन करनेवाले अमृतलाल नागर के विशाल साहित्य को देखकर उनकी निष्ठा, लगन और श्रमशीलता का अनुमान लगाया जा सकता हैं । उनके समुचे साहित्य पर उनके व्यक्तित्व की छाप विद्‌यमान हैं ।

प्रतिभा, श्रम, निष्ठा और संघर्षक्षमता के बल पर साहित्य सृजन के शिखर तक पहुँचनेवाले साहित्यकारों में नागर अग्रणी हैं । उनके कथा साहित्य में उनका व्यक्तित्व प्रतिबिंबित हैं । अतः उनके व्यक्तित्व को देखे बिना उनके साहित्य का मूल्यांकन पूरा नहीं हो सकता ।

### 1.1 जन्म :-

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री अमृतलाल नागर का जन्म आगरा के गोकुलपुरा मुहल्लें में एक अच्छे-भले, खाते-पिते नागर परिवार में 17 अगस्त 1916 ई. में हुआ ।

### 1.2 माता - पिता :-

नागर के पिता अभिनय दक्ष और कुशल तबला वादक थे । वे पोस्ट ऑफिस में क्लर्क का काम करते थे । वे बहुत ही महत्त्वांकाक्षी थे । लखनऊ के चौक मुहल्ले को अमर बना देनेवाले प्रतिभाशाली साहित्यकार अमृतलाल नागर को उच्च आदर्श और संस्कारों से संपन्न

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

माता - पिता की छत्रछाया मिली । अपने बाल्यकाल के संस्कारों के बारे में नागर स्वयं कहते है, "घर के संस्कार शुद्ध थे । अभिभावकों का नियंत्रण कठोर था । मैं अपने बचपन में कभी गली, सड़क पर लड़कों के साथ खेल नहीं सका, पतंग, ताश कुछ भी न जाना ।" [1]

### 1.3 दादा - दादी :-

नागर के दादा जी बैंक में मॅनेजर थे । दादा जी संस्कृत के अच्छे जानकार होने के कारण नागर को बचपन से ही श्लोक रटाये गए । स्कूल जाने से पहले वे दादी से लिपटकर कहानी सुनते थे । दादा जी की पाबंदी के कारण ग्यारह वर्ष की आयु तक उन्हें घर से अकेले बाहर निकलने न दिया जाता था ।

### 1.4 बचपन :-

नागर का बचपन लखनऊ में बीता । उनके बचपन के कुछ महिने आगरा में नाना-नानी के यहाँ गुजरे थे । दादा जी की सख्त पाबंदी के कारण गली के अन्य बच्चों की तरह वे खेल-कूद नहीं सके । इसका दुःख उन्हें जीवन भर सलता रहा । घर से बाहर न निकलने के कारण उनका एक भी मित्र नहीं था ।

नागर के बचपन में राष्ट्रीय आंदोलन हो रहे थे । लागों को जबरदस्ती जेल में डाला जाता था । नागर जी छोटे होने के कारण उन्हें समझ में नहीं आता था कि "आखिर देश क्या है ? पर यह लगता कि देश कुछ है जरूर, जिसके लिए कुछ भी किया जा सकता है ।..." [2] तात्पर्य - बाल्यकाल से ही मन में देशप्रेम की भावना जागृत हो चुकी थी ।

### 1.5 शिक्षा :-

नागर के परिवार के लोग पढ़ाई-लिखाई के बारे में सजग थे । लेकिन पढ़ाई में उनका ध्यान बिल्कुल नहीं लगता था । वे गणित में कमजोर थे । दादा जी उन्हें जज बनाना चाहते थे, तो पिता उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे ।

नागर के पिता ने फरवरी 1935 ई. में आत्महत्या की । पिता की आत्महत्या ने उन्हें "हरियाली से सीधे रेगिस्तान में लाकर पटक दिया- - - - - । सामने लंबा जीवन था । ऊबड़-खाबड़ रेगिस्तान की तरह जिस पर चिल-चिलाती धूप में अब उन्हें एक लंबा सफर तय करना था ।" [3] तात्पर्य - जीवन में आए परिवर्तन ने उनका जीवन ही बदल दिया ।

1.6 नौकरी :-

अपने पिता की मृत्यु के कारण घर की जिम्मेदारी उनपर आ पड़ी । आर्थिक समस्या हल करने के लिए सन 1935 ई. में उन्हें 'ऑल इंडिया यूनायटेड इंश्योरन्स कंपनी' के लखनऊ के कार्यालय में डिस्पैचर की नौकरी मिली । एक दिन कंपनी के अधिकारी के साथ कहासुनी होने के कारण उन्होंने इस्तीफा दे दिया । बाद में 'पापुलर पब्लिसिंग हाऊस' की स्थापना करके 'चकल्लस' पत्र का प्रकाशन आरंभ किया । उसमें भी वे असफल हुए । बंबई जाकर फिल्मों की कथा लिखने का कार्यारंभ किया और उसमें उन्हें सफलता मिली । प्रसिद्ध उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा उनके बारे में लिखते है - "वे हिंदी में बहुत प्रसिद्ध उपन्यासकार तो हैं ही, उन्होंने फिल्म जगत् में पटकथाएँ लिखने का काम भी बड़ी कुशलता से किया । एक बात बहुत कम लोग उनके बारे में जानते होंगे कि, भारतीय फिल्मों में डबिंग कला का प्रारंभ उन्होंने किया है और ऐसी कुशलता के साथ किया है कि लोग आश्चर्य करते हैं ।" [4]

कुछ सेठों की स्टुडिओं में विलासप्रियता देखकर उन्होंने ई. 1947 में फिल्मी दुनिया को छोड़ दिया । उसके बाद वे स्वतंत्र लेखन कार्य में जुट गए । आर्थिक समस्या को हल करने के लिए उन्होंने आकाशवाणी में सन 1953 से 1956 तक ड्रामा प्रोडयूसर के पद पर नौकरी की। बाद में उसका भी इस्तीफा दे दिया । इस प्रकार स्वतंत्र व्यक्तित्व रखने के कारण नौकरी का बंधन उन्हें उबा देता था । अंत में वे फिर से लेखन कार्य की ओर अग्रेसर हुए । इससे स्पष्ट है कि आर्थिक परिस्थिति कमजोर होने के कारण उन्होंने नौकरी की ।

1.7 विवाह :-

अमृतलाल नागर की सगाई बचपन में हुई थी । उनका विवाह उनके बचपन की सहेली प्रतिभा के साथ 31 जनवरी 1931 में हुआ । शादी के दो साल बाद गौणा हुआ ।

1.8 परिवार :-

अमृतलाल नागर के परिवार में दादा-दादी, माता-पिता, दो छोटे भाई, पत्नी, दो बेटे - कुमुद और शरद तथा दो बेटियाँ अचला और आरती थे ।

2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

किसी भी महान व्यक्ति के व्यक्तित्व में जन्म - संस्कार, कर्म, आचरण, विवेक, बुद्धि, तथा धार्मिकता, सामाजिकता, दृढ़ता, संकल्प, अध्ययनप्रियता जैसे गुण दिखाई देते है। अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व को हम निम्न पहलुओं मे विभाजित करके समझने का प्रयास करेंगे -

1 अंतरंग व्यक्तित्व

2 बहिरंग व्यक्तित्व

3 साहित्यिक व्यक्तित्व

## 2.1 अंतरंग व्यक्तित्व :-

नागर स्वभाव से विनोदी थे । बच्चों के साथ हँसना, खेलना, चुटकुलेबाजी करने में उन्हें बड़ा मजा आता था । उन्होंने स्वयं लिखा है, "अजीब सनके है मेरी, किसी से हारना नहीं चाहता । स्वयं अपने से भी नहीं इसीलिए कभी-कभी बगैर सोचे समझे भी कुछ कर जाया करता हूँ ।" [5] नागर का अंतरंग व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था, उसमें निम्न विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती है -

### 2.1.1 आत्मियता :-

नागर असीम स्नेह और ममता से ओत-प्रोत थे । सामान्य जनता तथा पीड़ितो-शोषितों के प्रति संवदेनशील थे । उनके व्यक्तित्व में विशेष आत्मियता और मोहकता थी । जिससे उनसे मिलनेवाला हर व्यक्ति उनकी ओर आकृष्ट होता था ।

### 2.1.2 बच्चों से प्यार :-

नागर जी को बच्चों से अधिक प्रेम और स्नेह था । मुहल्लों के बच्चों को इकठ्ठा करके हास-परिहास करते थे । उन्होंने बच्चों के लिए छः भागों में महाभारत लिखी हैं । उन्हें बालसाहित्य की प्रेरणा इसी बाल प्रेम से मिलीं हैं ।

### 2.1.3 विनम्रता :-

नागर से बात करते वक्त विनम्रता विशेषता साफ झलकती थी । ऐसा लगता था कि विनम्रतारूपी झरना ही फूट पड़ा है और हमारे सामने सवाल खड़ा होता था कि, क्या यह वही साहित्यकार है, जो जनजीवन को शब्दबद्ध करता हैं ?

### 2.1.4 घुमक्कड़ी :-

विभिन्न प्रकार के वातावरण को देखना, घुमना, फिरना, बहुश्रुत होना नागर जी की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । उनके बारे में सुदेश बत्रा ने लिखा है, " विभिन्न प्रकार के वातावरणों को देखना, घुमना, भटकना, बहुश्रुत और बहुपठित होना भी मेरे बहुत काम आता हैं । यह मेरा अनुभवजन्य मत है कि, मैदान में लड़नेवालें सिपाही को चुस्त रखने के लिए जिस प्रकार नित्य

की कवायत बहुत आवश्यक है । उसी प्रकार लेखक के लिए उपरोक्त अभ्यास भी आवश्यक हैं । केवल साहित्यिक वातावरण में रहनेवाला लेखक घाटे में रहता है ।" [6]

**2.1.5** <u>उत्फुल्ल हास्य</u> :-

उत्फुल्ल हास्य उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पहलू बन गया था । वे खुले दिलवाले व्यक्ति थे । उनकी हँसी सबको बाँध रखने में सक्षम थी । वे गप्पों और किस्सों के बादशहा थे । हास्य और व्यंग्य उनके साहित्य की भावधारा थी ।

**2.1.6** <u>इतिहास प्रेम</u> :-

इतिहास प्रेम के कारण उनके घर का विशाल कक्ष ऐतिहासिक, पौराणिक अनुपम चित्रों, पाषाण मूर्तियों, पुस्तकों के संकलन से सज्जित है। ऐतिहासिक आकर्षण के कारण उन्होंने लखनऊ के नजदीक के 'लक्ष्मण टिले' की खुदाई करवाई, जिसमें उन्हें कुछ अवशेष प्राप्त हो गए थे । उसके बाद वे लोगों में 'टिला खोदु नागर' के नाम से विख्यात हो गए ।

**2.1.7** <u>संघर्षशील जीवन</u> :-

नागर को 19 वर्ष की आयु में ही पिता की आकस्मिक मृत्यु के कारण 10 वी कक्षा में शिक्षा छोडकर नौकरी करनी पड़ी । अर्थाभाव के कारण उन्हें पद-पद पर संघर्ष करना पड़ा । साहित्य के क्षेत्र में भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा ।

**2.1.8** <u>फिल्मी जीवन</u> :-

फिल्मों में डबिंग कला का प्रारंभ नागर जी ने किया । सात साल वे इस संसार से जुड़े रहे । फिल्म निर्माता और निर्देशकों के साथ वे कोल्हापुर, मुंबई, मद्रास में रहें । लगभग 20-21 फिल्मों का कथा-संवाद कार्य उन्होंने किया ।

**2.1.9** <u>आकाशवाणी का जीवन</u> :-

आर्थिक समस्या के कारण नागर ने सन 1953 से 1956 तक भारत सरकार के रेडिओ विभाग में नौकरी की । नागर नाटक विभाग में प्रोडयूसर के पद पर भी कार्यरत थे । इसके पश्चात स्वतंत्र लेखन मे जुड़ गए ।

**2.1.10** <u>स्वाभिमानी</u> :-

अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण ही वे कहीं भी टिककर नौकरी नहीं कर सके । वे कभी मुहँ देखी बात नहीं कहते थे । जो कुछ कहते स्पष्टता से कहते ; परंतु इस निर्भिकता में

व्यक्ति द्वेष की अपेक्षा व्यक्ति की भलाई ही अधिक रहती थी । उनके स्वाभिमान में एक कलाकार की पवित्र आत्मा की आभा विद्यमान थी ।

2.1.11 महत्त्वाकांक्षी :-

नागर प्रबल महत्त्वाकांक्षी थे । अपने मित्र ज्ञानचंद गुप्त को अपनी अंतिम महत्त्वाकांक्षा के बारे में उन्होंने लिखा था, " जब मरूँ तो संसार अमर कलाकार कहकर मेरे नाम को प्रतिष्ठा दे । महत्त्वाकांक्षा बुरी चीज नहीं, मेरा अपना अनुभव कहता है कि एक महत्त्वाकांक्षी ही उत्साही एवं आशावादी हो सकता है । -------- साहित्यकार के नाते अपनी महत्त्वाकांक्षा के अंतिम बिंदू को पाना जीवन का स्वप्न है, सत्य है ।" [7]

2.2 बहिरंग व्यक्तित्व :-

नागर का व्यक्तित्व आरंभ से ही सीधा-सादा रहा है । वे घर में एक सफेद खादी का कुर्ता, पजामा अथवा एक सफेद धोती जो लुंगी की तरह पहनते थे । पैरों में खड़ाऊ पहनते थे । चश्में से झाँकती उनकी आँखे असीम स्नेह, प्यार एवं ममत्व की वर्षा करती थी । वे नियमित रूप से पूजा-पाठ करते थे, परंतु धार्मिक आडंबर और रूढ़ियों से सख्त नफरत करते थे । तड़क-भड़क कपड़े पहनना उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था । पान का बटुआ, खद्दर का पजामा-कुर्ता, कानटोपी उनके सजधज का जरूरी हिस्सा था । वे ऊँचे, गौर वर्णी, तेजस्वी मगर सरल व्यक्ति थे ।

नागर पान, भाँग और मिठाई के शौकिन थे । भाँग सेवन किये बिना लिखने का मुड नहीं आता था । इस प्रकार बाह्य व्यक्तित्व से संपन्न नागर की रूचियाँ भी अनेक प्रकार की थी । उन्हें सादगीयुक्त रहना पसंद था ।

2.2.1 प्रेरणा :-

नागर को सर्वाधिक प्रेरित करनेवाले दो साहित्यकार है -जयशंकर प्रसाद और शरत् । बंगाल के शरत् बाबू ने उन्हें लेखन का मूल लक्ष्य बताया - " जो कुछ भी लिखों वह अधिकतर तुम्हारे अपने ही अनुभवों के आधार पर हो, व्यर्थ की कल्पना के चक्कर में कभी न पड़ना ।" [7] इस उपदेश का नागर पर बहुत प्रभाव पड़ा ।

## 2.3 साहित्यिक व्यक्तित्व :-

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नागर का स्थान शीर्ष स्थान पर है । वे केवल कथाकार के नाते ही प्रसिद्ध नहीं है; बल्कि उन्होंने कहानी, नाटक, बालसाहित्य, संस्मरण, यात्रावृत्त, साक्षात्कार, पत्रकारिता, हस्य-व्यंग्यप्रधान निबंध आदि सभी विधाओं में लेखन कार्य किया हैं ।

### 2.3.1 उपन्यासकार :-

हिंदी साहित्य संसार को नागर उपन्यासकार के रूप में अधिक परिचित हैं । उनके उपन्यास 'अमृत और विष' और 'बूँद और समुद्र' हिंदी साहित्य के 'माईल स्टोन' तथा उनके कीर्ति के अक्षय आधारस्तंभ माने जाते हैं । उनका उपन्यास साहित्य निम्नलिखित हैं -

| | उपन्यास | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 1. | महाकाल | ई. सन 1947 |
| 2. | सेठ बाँकेमल | ई. सन 1955 |
| 3. | बूँद और समुद्र | ई. सन 1956 |
| 4. | शतरंज के मोहरे | ई. सन 1958 |
| 5. | सुहाग के नूपुर | ई. सन 1960 |
| 6. | अमृत और विष | ई. सन 1966 |
| 7. | सात घुँघटवाला मुखड़ा | ई. सन 1968 |
| 8. | एकदा नैमिषारण्ये | ई. सन 1968 |
| 9. | मानस का हंस | ई. सन 1971 |
| 10. | नाच्यौ बहुत गोपाल | ई. सन 1978 |
| 11. | खंजन-नयन | ई. सन 1981 |
| 12. | बिखरे तिनके | ई. सन 1982 |
| 13. | अग्निगर्भा | ई. सन 1983 |
| 14. | करवट | ई. सन 1985 |

### 2.3.2 कहानीकार :-

नागर का "वाटिका" नामक पहला कहानी संग्रह ई. सन 1935 में प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह के पश्चात उन्होंने निम्नलिखित अन्य कहानीसंग्रह प्रकाशित किए -

| | कहानी | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 1. | वाटिका | ई. सन 1935 |
| 2. | तुलाराम शास्त्री | ई. सन 1941 |
| 3. | एटम बम | ई. सन 1956 |
| 4. | पीपल की परी | ई. सन 1962 |
| 5. | कालदण्ड की चोरी | ई. सन 1963 |
| 6. | मेरी प्रिय कहानियाँ | ई. सन 1970 |
| 7. | पाँचवा दस्ता और सात अन्य | ई. सन 1970 |
| 8. | भारतपुत्र नौरंगीलाल | ई. सन 1971 |
| 9. | सिकंदर हार गया | ई. सन 1973 |

**2.3.3** रेखाचित्र :-

| | | |
|---|---|---|
| 1. | नवाबी मसनद | ई. सन 1939 |

**2.3.4** अनुवाद - कर्ता :-

अनुवाद कार्य में उन्होंने भाव और भाषा का बखूबी से वहन किया है । शायद इसी कारण उनकी भाषा में प्रौढ़ता और परिष्कृतता आदि गुण नजर आते है । अपना शब्दकोश बढाने के लिए और विचारों की परिपक्वता के लिए नागर ने निम्नलिखित अनुवाद कार्य किए -

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | बिसाती | ई. सन 1935 | मोपासा की कहानियाँ |
| 2. | प्रेम की प्यास | ई. सन 1937 | गुस्ताव फ्लावेर के उपन्यास 'मादाम बोनरी' |
| 3. | काला पुरोहित | ई. सन 1939 | एन्टन चेखब की कहानियाँ |
| 4. | आँखो देखा गदर | ई. सन 1955 | विष्णुभट्ट गोडसे की मराठी पुस्तक 'माझा प्रवास' |
| 5. | दो पक्कड़ | ई. सन 1955 | क.मा. मुंशी के तीन नाटक |
| 6. | सारस्वत | ई. सन 1956 | 'मामा वरेरकर' का मराठी नाटक |

**2.3.5** सर्वेक्षण - कर्ता :-

अमृतलाल नागर ने निम्नलिखित सर्वेक्षण कार्य भी किया है -

2. ये कोठेवालियाँ ई. सन 1961

**2.3.6** पत्र - पत्रिकाएँ :-

बचपन से ही नागर को पढ़ाई में रूचि नहीं थी । लेकिन घर में आनेवाली पत्र - पत्रिकाएँ पढ़ने का शौक था । आर्थिक समस्या तथा लेखन कार्य के प्रति निष्ठा के कारण नागर की रूचि पत्रकारिता की ओर भी अधिक रहीं । उन्होंने निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य भी किया हैं -

1. संपादन ई. सन 1934
2. चकल्लस ई. सन 1938
3. नया साहित्य ई. सन 1945

पत्रकार के रूप में नागर को सफलता तो अवश्य प्राप्त हो गई ; परंतुइससे उनमें स्थित कलाकार संतुष्ट न हो सका जिसके कारण उनकी वृत्ति स्वतंत्र लेखन की ओर अधिक रही ।

**2.3.7** नाटककार :-

अमृतलाल नागर की रूचि नाट्य लेखन की ओर भी रही है । उनका नाट्य संसार निम्नलिखित हैं -

1. परित्याग
2. युगावतार
3. नुक्कड़ पर
4. बात की बात
5. चमकदार सीढियाँ
6. उतार-चढ़ाव
7. चंदन वन
8. चढ़त न दूजो रंग

**2.3.8** बाल-साहित्यकार :-

नागर को बच्चों से विशेष स्नेह और प्यार था । बच्चों को इकठ्ठा कर हास-परिहास कर खूब मनोरंजन करते थे । अन्य विधाओं के साथ-साथ नागर ने बाल-साहित्य का भी सृजन किया है -

1. बच्चों का महाभारत
2. निंदिया आ जा
3. बजरंगी नौरंगी
4. बजरंगी पहलवान
5. इतिहास झरोखें

**2.3.9** संस्मरणकार :-

नागर ने अपने समकालीन और अपने से अग्रज साहत्यकारों का प्रभाव ग्रहण करके एक चेतन कलाकार के रूप में अपना पौरुषेय संवेदन संस्मरण के द्वारा प्रकट किया हैं -

1. जिनके साथ जिया

**2.3.10** आत्मकथाकार :-

आत्मकथा लिखने के क्षेत्र में नागर अग्रणी हैं । उन्होंने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन को और पारिवारिक घात-प्रतिघातों को ज्यों का त्यों अभिव्यक्त किया है ।

1. टुकड़े - टुकड़े दास्तान

**2.3.11** जीवनी - लेखक :-

साहित्यिक जीवन में अमृतलाल ने निम्नलिखित जीवनी का सृजन किया -

1. चैतन्य महाप्रभु

**2.3.12** व्यंग्य वार्ताएँ :-

अमृतलाल नागर स्वभाव से विनोदी और जिंदादिल इन्सान थे । स्वभावगत विशेषताओं के अनुरूप नागर ने कुछ व्यंग्य वार्ताएँ लिखी है -

1. कृपया दाऊँ चलिए
2. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ

**2.3.13** पुरस्कार एवं सम्मान :-

हिंदी साहित्य जगत् नें अमृतलाल नागर को उनका साहित्यिक योगदान दृष्टिगत कर उन्हें विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया है । इससे उनकी प्रतिभा संपन्नता और महानता सिद्ध होती हैं । उन्हें निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है -

1. 'बूँद और समुद्र' उपन्यास को 'बटुकप्रसाद पुरस्कार' एवं 'सुधाकर रजत पदक' प्राप्त हुआ है ।

2. 'अमृत और विष' को 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' प्राप्त हुआ है ।

इन पुरस्कारों के साथ-साथ भारत सरकार ने उन्हें "पद्मभूषण" उपाधि से पुरस्कृत किया है । तथा उन्हें 'प्रेमचंद पुरस्कार', 'वीरसिंहदेव पुरस्कार' से भी नवाजा गया है । इसके अतिरिक्त 'सोविएत रूस' एवं मॉरिशस की यात्रा करने का सौभाग्य पुरस्कार के रूप में उन्हें मिला था ।

**2.3.14** मृत्यु :-

23 फरवरी, 1990 ई. के दिन यह जाज्वल्यमय, उज्जवल नक्षत्र अपनी अंतिम प्रभा बिखेर हमेशा के लिए अस्त हो गया । भौतिक शरीर न रहने पर भी अपनी अद्भूत एवं मौलिक कृतियों के रूप में वे सदैव अक्षय अमर रहेंगे ।

**3.** कृतित्व :-

**"अमृतलाल नागर के उपन्यासों का विषयगत विवेचन"**

साहित्य समाज का दर्पण होता है, उसी तरह साहित्यकार जिस समाज में रहता है, साँस लेता है, उसका प्रभाव अनायास उसपर पड़ता है । कोई भी साहित्यकार अपने युग का प्रमुख व्यक्ति हो न हो; परंतु वह अपने समय की विभिन्न विचार प्रणालियाँ, परिस्थितियाँ आदि का वहन अपने साहित्य में अवश्य करता है । अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में समाज, संस्कृति, इतिहास और मानव जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । मानव मन की गहन अनुभूतियों का नागर ने अपनी अलौकिक प्रतिभा और तीव्र अनुभूतियों के माध्यम से ऐसा सुंदर प्रतिपादन किया है कि, प्रत्येक पक्ष का समग्र चित्रण उभरकर सामने आ जाता है ।

विश्व का सभी साहित्य युग-युग की संचित भावराशि का अथाह भंडार होता हैं, क्योंकि उसमें कुछ शाश्वत तत्त्व होते है, जिसका पाठक भावन करता है । साहित्य में मानव जीवन के शाश्वत तत्त्वों का उद्घाटन, सत्-असत् प्रवृत्तियों का संघर्ष, लोकहित और लोकानुरंजन की प्रवृत्ति तथा महान उद्देश्य आदि तत्वों पर विस्तार से विचार किया जाता है । अमृतलाल नागर ने जीवन के अनुभवों को महसूस करके उनको ईमानदारी से लिखने का प्रयास किया है । हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित उपन्यासकार, सजग इतिहास-पुराण प्रेमी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी अमृतलाल नागर के उपन्यासों का विषयगत विवेचन इस प्रकार है -

## 3.1 भूख (महाकाल) :-ई.सन 1947

प्रस्तुत उपन्यास ऐतिहासिक घटना पर आधारित है । इसमे 1942 के बंगाल के अकाल का यथार्थ चित्रण किया गया है । अकाल युग की ज्वलंत समस्याओं को अपने में समेटकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ है । मनोवैज्ञानिक विवेचन की दृष्टि से यह चित्ताकर्षक उपन्यास है ।

लेखक उपन्यास के प्रारंभ में ही स्पष्ट करता है कि, यह कहानी किसी चरित्र विशेष की नहीं प्रत्युत व्यक्ति के प्रति व्यक्ति की संवेदना की कहानी है । इस उपन्यास का नायक पाँचू जीवन का प्रतीक है । वह बुद्धिजीवी और सरस्वती पुत्र है, परंतु उसका ज्ञान उसे पेट भर भोजन नहीं दे पाता । केवल पाँचू ही नहीं, गाँव के निरीह सैकडों लोग बिना भोजन के धीरे -धीरे मृत्यु के निकट चले जा रहे है । पाँचू के घरवाले कई दिनो से भूखे है, परंतु उन्हे आबरू का भय है ।"आबरू चली गई तो लाख का आदमी खाक का।" [9] पाँचू आदर्श नहीं यथार्थ है । भूख ने रिश्तों को समाप्त कर दिया । नरुद्दीन ने भूख का गुस्सा माँ का गला घोटकर उतारा ।"माँ के मरते ही गुस्से की लगाम काबू में आई , लेकिन भूख में साझीदार के लिए नफरत इतनी थी कि गुनाह को गुनाह न समझा ।" [10] नरुद्दीन जमीदारों के हाथों गाँव की बहू -बेटियों का सौदा करने लगा कानाई ने पिता के श्राद्ध के लिये पत्नी को वेश्या बनने पर मजबूर किया । मुनीर की पत्नीने पति और बच्चो की चिंता छोड़ भूख से विवश होकर अपनी आबरू बेच डाली।'अस्सी प्रतिशत भले घरों की बहु-बेटियाँ मजबूर किये जाने पर पैसों या खाने की लालच से अथवा भूख और चिंताओं की उलझन से छुटकर दो घडी गम गलत करने की नियत से वेश्याएँ हो चुकी हैं ।" [11]

मोनाई महाजन गाँव में लोगो को अपनी बची-खूची संपत्ति बेचने के लिए बाध्य करता हैं। कुत्ते-बिल्ली की मौत से भी बद्तर मनुष्य की मौत हुई । पेट की आग ने रिश्तें-नातों को समाप्त कर दिया । 'रिश्ते बेहद खल रहे थे । परेश घोषाल ने एक दिन अचानक ही अपने छोटे भाई और विधवा बहन पर अनैतिक संबंध का दोषारोपण कर दोनों को घर से निकाल दिया ।" [12] लेखक एक स्थान पर जुठन खाने के लिए आदमियों और कुत्तों में संघर्ष का चित्रण कर यह साबित किया हैं कि मनुष्य और कुत्तों में अंतर नहीं है ।

जीवन की भीषण स्थिति से पलायन करनेवाला पाँचू एक शिशु को देखकर मोह में बँधता है । वह सोचता है - "माँ के मर जाने के बाद भी यह बच्चा जीवित रहा, क्या यह घटना

जीवन के सत्य को सिद्ध नहीं करती ।" [13] पाँचू उस बच्चे के स्वर से भूख और मौत से लड़ने के लिए प्रेरित होता हैं । वह किसी भी मूल्य पर उस बच्चे को बचाना चाहता है । तो दूसरी ओर पाँचू का बड़ा भाई शिबू बूरी संगत में फँसता है । वह पत्नी को मारकर कपडे और बर्तन बेचता है । अंत में वह पत्नी और बहन का सौदा मुठ्ठीभर चावल के लिए करता है। तो मंगला और बकलफूल का संबंध शारीरिक बल के साथ टूट जाता है । बहुत उत्तेजना होने पर दोंनों एक-दूसरे के शरीर से नोचा-खसोटी कर हाँफते थे । बेनी और उसकी पत्नी की भी यही स्थिति है । दो महीने पहले ही उसका ब्याह हुआ है । नई जवानी, नई उमंगे और यह अकाल ।दोनों की जवानी बूढ़ी हुई है । दूसरी ओर पाँचू के अंधे पिता भूखे पेट भी अपनी कोठरी में पड़े-पड़े पत्नी को पुकारते है, तो पत्नी जवान बहु-बेटों के सामने लाजों मर-मर जाती है । जब शारीरिक भूख जगती और पत्नी का साथ न मिलता तब वे संन्यासी होने की सोचते है ।

नागर ने प्रस्तुत उपन्यास में मोनाई महाजन, दयाल जमींदार और सरकार की तत्कालीन नीति का पर्दाफाश किया है । उन्होने कथा के उद्देश्य को -चिंता, आशा, काम, वासना, कर्म, ईर्ष्या आदि मनोभोवो को -पात्रों के माध्यम से मार्मिकता से स्पष्ट किया है । प्रस्तुत उपन्यास में अकाल की दारुण स्थिति का चित्रण करने में नागर सफल हुए हैं ।

### 3.2 सेठ बाँकेमल - ई. सन 1955

'सेठ बाँकेमल' हास्य-व्यंग्य पर आधारित एक लघु उपन्यास है । सेठ बाँकेमल का हास्य लोकजीवन का हास्य है, जो यथार्थ है और इस यथार्थ में सहजता और स्वाभाविकता है । नागर ने उपन्यास में हास्य-व्यंग्य को पूर्ण कलात्मकता के साथ पेश किया है । 'सेठ बाँकेमल' में दो घनष्ठि मित्रों- सेठ बाँकेमल और चौबेजी की कहानी है । जिस प्रकार दो आश्रयहीन, निठल्ले व्यक्ति जीविकोपार्जन के लिए अपनी बुद्धि एवं कौशल से काम लेते है, उसे हास्य-व्यंग्य शैली में चित्रित करना उपन्यास का विषय है ।

सेठ बाँकेमल दुकान पर बैठकर अपने दिवंगत मित्र पारसनाथ चौबे के साथ गुजारे हुए जीवन के अनुभवों को अपने भतीजे चौबेजी के पुत्र को बताते है । एक बार चौबे जी और सेठ बाँकेमल व्यापारिक काम के लिए दिल्ली जाते हैं । वहाँ वे एक कोठेवाली के यहाँ पहुँचकर ऐशो-आराम करते हैं । सेठ बाँकेमल और उनके मित्र को व्यापारी दाँवपेंच के चमत्कार, मल्लयुद्ध, पहलवानी, पीड़ित व्यक्तियों का उद्धार करने के लिए पूँजीपतियों से लड़ना, जुआ खेलना, बुढ़ापे में भी पतंग उड़ाना आदि छंद है । इन दोनों के छंदों का वर्णन हास्यात्मक और

रोचक ढंग से किया गया है । इसके साथ-साथ सेठ बाँकेमल के द्वारा लेखक ने सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफ़ाश किया है । अपने भतीजे को अतिशयोक्ति के सहारे अपने और अपने मित्र के शौक बताकर उसे अपने अतीत की सैर करवाते है । नई-पुरानी पीढ़ी का संघर्ष दिखाया है । साथ ही साथ सेठ बाँकेमल अपने अतीत की जिंदगी में पहुँचकर आगे की जिंदगी जीने का सहारा खोजते हैं । 'डाग्डर मूंगाराम' के चमत्कारों के बारे में बताकर उतनी ही सहजता से हिटलर के बारे में भी बताते है । लाट साहब की बीवी को डाग्डर मूंगाराम द्वारा रोगमुक्त करने की बात रोचक ढंग से बताते हैं ।

बाँकेमल बातें करते समय अपनी दुकानदारी, ग्राहकों को निपटाना, नौकरों को आदेश देने का काम पूरी लगन से करते हैं । सेठजी में सहृदयता, नीडरता, रंगीन मिजाज, जोशो-जवानी के गुण है । वे कहते है -"मेरा कामकाज तो भैयो, येई है कि अपने को खुश रक्खो । सदा मौज में रहो । खुसकैटी में मजा नई है प्यारे, एक दिन चलो मेरे साथ राजघाट पै ठंड़ाई फंड़ाई छानी जाए । .....'जिंदगी जिंदादिली का नाम है और मुर्दा दिल साले खाक जिया करते है .....।"[14] कहीं कहीं अंग्रेजी में गाली भी देते है । लेकिन वे अंग्रेजों के विरोधी हैं । साथ ही साथ हिंदु-मुस्लिम एकता चाहते है । आगे बाँकेमल अकबर बादशहा द्वारा आगरा में राजधानी स्थापित करना और जहाँगीर तथा उसके पुत्र शाहजहाँ की बेगम की मृत्यु एवं उसके उपरांत ताजमहल निर्मित होने का किस्सा भतीजे को सुनाते है । विश्वामित्र के बारे में कहते है, "विश्वामित्र रिसी-मुनी म्हाराज, जिन्ने दस हजार बरस तो पत्ते खाके तपस्या कीनी थी, दस हजार बरस हवा फांक के रये और दस हजार बरस तक पानी पी के ही घनघोर तप कीना .....।" [15]

सेठ जी अपने यथार्थ चित्रण से सजीव हैं, तो चौबे जी सुधारवादी विचार के है । पुराने जमाने की शेरो-शायरी तथा चौबेजी का स्मरण सेठ बाँकेमल को विव्हल कर देता है । इस प्रकार नागर ने इस उपन्यास में लोकभाषा की सजीवता से उपन्यास को सजीव तथा सशक्त बनाया है । हास्य-व्यंग्य के माध्यम से हँसते-हँसते जीवन जीने की कला सीखा दी है । इसके साथ-साथ परम्परा और कुलमर्यादा की खिल्ली उड़ाई है । उपन्यास जिस हास्य-व्यंग्य और अंलमस्ती को दृष्टि में रखकर लिखा गया है उसका पूर्ण प्रतिफलन हुआ है और इस हेतु उपन्यास की सफलता असंदिग्ध है ।

### 3.3 बूँद और समुद्र - ई. सन 1956

नागर का सामाजिक उपन्यास 'बूँद और समुद्र' व्यक्ति और समाज की समन्वयवादी दृष्टि का तथा भारतीय जन-जीवन का परिचय देता हैं । इसमें उपन्यासकार ने समुद्र रूपी समाज में बूँद रूपी व्यक्ति के अस्तित्व का महत्त्व आँकने का प्रयत्न किया है । "जैसे बूँद से बूँद जुड़ी रहती है, लहरों से लहर । लहरों से समुद्र बनता है - इस तरह बूँद में समुद्र समाया है ।" [16] अर्थात जैसे समाज का महत्त्व व्यक्ति के लिए है वैसे व्यक्ति का महत्त्व समाज के लिए है । सर्वप्रथम जिस परिवार में मनुष्य जन्म लेता है, उसका वातावरण, उसके संस्कार बच्चे को अत्याधिक प्रभावित करते है । इसका पूरा विवरण लेखक ने दिया है । 'बूँद और समुद्र' एक विशाल फलक पर लिखा गया उपन्यास है ।

इस उपन्यास का महत्त्वपूर्ण और अविस्मरणीय पात्र है ताई । ताई के माता-पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी । वह दादा-दादी की लाड़ली थी । चाचा-चाची ने तंग आकर ताई का विवाह फक्कड़ द्वारकादास से कर कर्तव्य की पूर्ति कर दी थी । ताई के भाग्य से सेठ द्वारकादास की किस्मत का सितारा चमक उठा; परंतु वे अपनी संतान का मुँह देखने के लिए तरस गए । ताई अपने पति को यह सुख नहीं दे पायी । इस कारण द्वारकादास ने दूसरा विवाह कर दिया । "जिस दिन उनकी बारात चढ़ी उसी रात ताई घर छोड़कर चली गई ।" [17] लोगों की उपेक्षा से उसक अंतर में दबी हिंसा चौमुखी होती है । ताई दूसरों का अहित करने के लिए जादू-टोना करती है । परंतु पति-परित्यक्ता ताई को जब राम जी एवं सज्जन जैसे नेक पुरुषों का सहयोग मिलता है , तो उसके जीवन में परिवर्तन होता है । ताई के प्रतिरूप नंदो के चरित्र का विकास भी दूषित वातावरण में हुआ । नंदो भूभति सुनार की इकलौती पुत्री थी । पिता के प्यार ने उसे ढ़ीठ बना दिया था । "नंदो का स्वभाव ही ऐसा बन गया था कि वह और सब कुछ बन सकती थी, मगर बहुरियाँ नहीं ।" [18] इसी कारण पति द्वारा उपेक्षित होने पर पिता के घर सदा के लिए आती है । ताई से मिलकर मनिया को विधवा संतो से फँसवाती है और बाद में बड़ी भाभी मोहिनी को विरहेश के जाल में फँसाती है । परिणामस्वरूप घर से बेइज्जत होकर निकाली जाती है । उत्तरोत्तर नंदो में गुणों के स्थान पर अवगुण ज्यादा दिखाई देते है ।

दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र है - सज्जन जो चित्रकार है । सज्जन के जीवन में तीन तरह की औरतें आती है । एक से वह पैसे देकर आनंद खरीदता है; दूसरी से प्रेमोपहार में रस

पाता है और तिसरी वे तमाम औरते हैं जिनसे उसका शिष्टाचार का नाता है । ऐसी स्थिति में गौरवशाली व्यक्तित्व की धनी वनकन्या उसके जीवन में प्रवेश कर उसमें अमूलाग्र परिवर्तन करवाती हैं । महिपाल सज्जन का मित्र है । वह अपनी पत्नी कल्याणी के गुणों को अस्वीकार कर वह अपनी प्रेमिका शीला स्वींग से कहता है "तुम मेरी थकान की साथी हो, कल्याणी मेरे जीवन की निष्ठा ।मैं तुम दोनों से उऋण नहीं हो सकता ।" [19] महिपाल उच्च कोटि का साहित्यकार होते हुए भी उसे सबसे अधिक अभाव खलता है रूपये का । इसी संघर्ष से तंग आकर वह आत्महत्या करता है ।

उपन्यास के अंत में सज्जन को बाबा रामजी की प्रेरणा से अपनी सम्पत्ति का अधिकांश भाग आश्रम को देकर एक नया आदर्श स्थापित करते हुए दिखाया है । सज्जन वनकन्या से प्रभावित होकर उससे शादी करता है । वनकन्या के पिता जगदम्बा सहाय अपने पुत्र का विवाह पंद्रह हजार रूपये की लालच में एक ऐसी लड़की से करते है, जिसका केवल उपरी भाग स्त्री का है । कन्या अपनी भाभी की आत्महत्या का कारण पिता को समझती है और न्याय के लिए पिता को जेल भिजवाने में उसे संकोच नहीं होता । उसके पिता अपने बहु पर ही बलात्कार करते है और जब वह आत्महत्या करती है, तो उसे राजनीतिक प्रचार का साधन बनाते है । जब कन्या न्याय माँगती है, तो उसे साम्यवादी पार्टी की सदस्या घोषित कर उसे बेइज्ज़त किया जाता है । कन्या के पिता उसके पिछे गुण्डे छोड़ते है ।

नागर ने आदर्श नारी तथा प्रतिभाशाली नारी पात्र के रुप में वनकन्या को प्रस्तुत किया है । नागर का सामाजिक उपन्यास 'बूँद और समुद्र' व्यक्ति और समाज की समन्वयवादी दृष्टि का परिचय देता है । सामाजिक जीवन के अनेक बनते बिगडते चित्र और स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यक्तिवादी चेतना को इस उपन्यास के महिपाल, सज्जन, वनकन्या, शीला और स्वींग आदि पात्र अभिव्यक्त करते हैं । उपन्यासकार का प्रमुख नारी पात्र ताई नारी हृदय की विवशता, विकृतियाँ आदि को अभिव्यक्त करता है । तात्पर्य - यह एक सफल सामाजिक उपन्यास है ।

### 3.4 शतरंज के मोहरे - ई. सन 1958

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है । ऐतिहासिक धरातल पर आधारित सामंतीय तथा नवाबी जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित करनेवाला एक सफल उपन्यास है । इसमें तत्कालीन समाज जीवन का स्पष्ट रूप दिखाई देता है ।

उपन्यास की कथा मूल रूप से लखनऊ के नवाब बादशहा गाजीउद्दीन हैदर और उसके उत्तराधिकारी नसीरूद्दीन के राज्यकाल तथा उन दोनों की मानसिक दशा का बहुत ही सटीक चित्रण करनेवाली है । नसीरुद्दीन विलासी था । लखनऊ में नवाब भोग-विलास में मग्न होने के कारण अंग्रेजों के फेंके जाल में बुरी तरह जकड़ चुके थे । नवाब के स्थानीय जागीरदार जब समय से लगान की वसुली नहीं कर पाते, तो नवाब अपनी सेना को सुसज्जित कर वसुली के लिए प्रस्थान करता था । ऐसे प्रयाणों-प्रस्थानों में प्रजा-पीड़न अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता था । बेगार में पकड़ी हुई निरीह जनता का आर्तनाद 'रूस्तम नगर' में सुनाई देता है और यह केवल एक नगर की ही बात नहीं थी; अपितु प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक गली-कूचों में ऐसा ही कुहराम मचा हुआ था । शस्य-श्यामल धरती को वीरान करना, बहन-बेटियों की अस्मत लुटना, आए दिन की बात थी । स्थिरता और राजनैतिक सुव्यवस्था के लिए ही प्रजा ने राजा और नवाबों का साथ न देकर अंग्रेजों का साथ दिया । सामाजिक व्यवस्था में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय थी। दुलारी हिंदु होते हुए भी मुसलमानों द्वारा अपहृत की जाती है और वैवाहिक संबंध स्थापित होने के उपरांत भी उसके सगे संबंधी मुसलमानों के परिवारों में आने-जाने से गुरेज नहीं करते । दुलारी आगे चलकर अवध के नवाब को अपनी उँगली पर नचाती है ।

सबसे बद्तर अवस्था हिंदुओं की थी । मुसलमान हिंदुओं की लड़कियों से विवाह करत लेते थे, पर हिंदु लोग मुस्लिम लड़कियों को न अपना पाते थे । मुस्लिम परिवार की समस्या दुलारी के घर में मिलती है । बड़े भाई की पत्नी छोटे दो भाईयों की भी भोग्या है । नवाबों का नैतिक पतन चरम सीमापर था । अवध संतान अवध की गद्दी का उत्तराधिकारी बन जाती थी, तो साधारण दासी को भी बेगम का दर्जा मिल रहा जाता था । दुलारी दो बच्चों की माँ होने पर भी अपने दो देवरों के साथ-साथ शाही महलों के बावर्चो की भी प्रेमिका थी । महरी और खवांसी बेगम बनने के ख्वाब देखती है । इस प्रकार अवध का राजकाज महरी, खवांसो तथा दासियों के षड्यंत्र पर चलता है । नवाबों के वैभवपूर्ण जीवन तथा नाच-गानों और वेश्याओं के प्रति उनकी अनन्य भक्ति का चित्रण कर ढलते हुए अवध के नवबी ऐश्वर्य का जो चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वह इतिहास संगत है ।

नवाबों की सारी संपत्ति उत्तराधिकारी के अभाव में अंग्रेजी कंपनी को घोषित होती थी । विलासिता में डूबे रहने के कारण देशी राजा और नवाब अपना पुरुषत्व खो बैठने के कारण संतानहीन होते जा रहे थे । नसीरूद्दीन ऐसी ही संतान होने के कारण अपनी अकर्मन्यता और

विलासिता के कारण राज-पाट खो देता है । "विलास की सर्वोपरी मान्यता में सामाजिक जीवन डूबकर सड़ रहा था ।" [20] बेगमें राजमाता बनने के लिए किसी भी दासी पुत्र को अपना पुत्र घोषित करती थी । यह भी तो सत्य है कि, दासियों के पेट में भी नवाबों का वीर्य पलता था । ऐसे अवसरों पर अंगेज जासूस सक्रिय रहकर खबर पहुँचाते थे ।

'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिती की गई है । घोड़े-पालिकियों का वर्णन, मुर्गे लड़वाना, पतंगबाजी, नाचगाना, चीते और घोड़े की लड़ाई उस जमाने की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करते है । इस ऐतिहासिक उपन्यास में कल्पना और इतिहास का मणिकांचन संयोग हुआ है । इस कारण उपन्यास रोचक बन पड़ा है । प्रत्येक व्यक्ति अवसर मिलते ही एक-दूसरे को शतरंज का मोहरा बनाने पर तुला है । बादशाही बेगम भी स्वार्थी तथा गहरी साजिश करनेवाली, दंभी औरत के रूप में चित्रित हुई है । साथ ही साथ कुलसु नामक हरिजन बालिका के त्याग और दृढ़ता का आदर्श प्रस्तुत हुआ है ।

'शतरंज के मोहरे' उपन्यास का पर्यवसान करुणा में होता है । अधिकांश पात्र या तो मृत्यु को प्राप्त करते है या पलायन या फिर अंग्रेजों द्वारा बंदी बना लिए जाते है । ऐतिहासिक उपन्यासों में 'शतरंज के मोहरे' उपन्यास का स्थान विशिष्ट है । सुगठित कथानक, सजीव चरित्र-चित्रण, अनुकूल संवाद, सफल वातावरण की सृष्टि ने उपन्यास के महत्त्व को अनायास ही बढा दिया है । उपन्यास की भाषा में ताजगी और जीवंतता है । तात्पर्य - यह एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है ।

### 3.5 सुहाग के नूपुर - ई. सन 1960

नागर ने उपन्यास के प्रारंभ में 'निवेदनम्' में लिखा है कि ईसा की प्रथम शताब्दी में महाकवि इलंगोवन रचित तमिल महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' भारतीय साहित्य की एक अनमोल रचना है । प्रस्तुत उपन्यास उक्त महाकाव्य पर आधारित होते हुए भी प्रायः एक स्वतंत्र रचना है । लेखक ने 'सुहाग के नूपुर' में प्रेम त्रिकोण के द्वारा यह दिखाया है कि, पुरुष ना तो पत्नी को देवी का सम्मान दे सकता है और न ही वेश्या को पत्नी के रूप में स्वीकार करता है । अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए उन्होंने कोवलन को चंचल रूपासक्त मन के प्रतीक के रुप में चित्रित किया है ।

नगर के सर्वाधिक धनी व्यापारी मासात्तुवान के इकलौते पुत्र कोवलन का विवाह नगर के दूसरे धनिक व्यापारी मानाइहन की इकलौती पुत्री कन्नगी से होता है । परंतु विवाह के पूर्व ही

कोवलन राज्य की ओर से प्रतिष्ठित 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार प्राप्त नृत्य कुशल नगरवधु माधवी के आकर्षण पाश में बँध जाता है । माधवी ने अपनी मुखमुद्राओं, रुप, गुण और चातुर्य से "उसने वर्ष का पुरस्कार भी जीता और नगर का नवनायक भी ।" [21] कोवलन माधवी से प्यार तो करता है; लेकिन उसकी शादी कन्नगी से होती है ।

माधवी वेश्या पेरियनायकी की पोष्य-पुत्री है । उसे अपने प्रेम पर अटूट विश्वास है और अभिमान भी । वह कोवलन को पूर्ण सत्वाधिकार से प्राप्त करना चाहती है । माधवी वेश्या होते हुए भी कोवलन से एकनिष्ठ रहती है । कोवलन माधवी को दिए वचनानुसार कन्नगी को उसकी सुहाग रात पर माधवी की सेवा करने कोठे पर लाता है । माधवी कन्नगी से ईर्ष्या और जलनभरी बातें कर कोवलन की नजरों में गिर जाती है । शांत, सुंदर कन्नगी को देखकर कोवलन को लगता है उसने काँच के मोह में हीरे का तिरस्कार किया । वह कन्नगी से क्षमायाचना करता है और कन्नगी भी उसे तुरंत माफ कर देती है । कुछ दिनों बाद माधवी कुटिल नीति का इस्तेमाल कर कोवलन को अपने प्रेमपाश में बाँधती है । दोनों एक साथ रहने लगते है । उन्हें एक पुत्री होती है । कोवलन सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण माधवी और उसकी पुत्री को कुलवधु का अधिकार तथा सुहाग के नूपुर नहीं दे पाता । माधवी नूपुर पाने में असफल रहती है परिणामतः विद्रोहिनी बनती है । अंत में धर्मशाला से खाली हाथ लौटे कोवलन से वह कहती है - "तो अब यों भी न बैठ पाओगे । मैं अब तुम्हें तुम्हारी चरम गति पर ही पहुँचाकर दम लूँगी । अपना सर्वस्व निछावर कर चुकने के उपरांत अंत में मुझे तुमसे कुछ न मिला । तुम मुझे सती न बना सके तो अब मैं तुम्हे वेश्या बनकर ही दिखलाऊँगी । निकल जाओ मेरे घर से ! उठो जाओ ।" [22] माधवी राजपुरुष से संबंध बढ़ाकर समुद्रतट पर उसके जरिए कोवलन को पिटवाती है । थका-हारा-पिटा कोवलन फिर से कन्नगी की शरण में जाता है । वे दोनों नया जीवन आरंभ करने के लिए मदुरा के लिए प्रस्थान करते है । ठीक इसी समय कावेरीपट्टणम् नगर में जलप्लावन होता है । नगर की समग्र धनराशि, वैभव तथा लोग जलमग्न होते है । माधवी अपनी विपरित अवस्था में बौद्ध विहार में शरण लेकर महाकवि इलंगोवन से न्याय माँगती है ।

मदुरा में नूपुर बेचते समय कोवलन को चोर ठहराकर बंदी बनाया जाता है । लेकिन यह सब देख कन्नगी सतीसावित्री की तरह अपने पति परमेश्वर को मौत के मुँह से बचाकर निर्दोष सिद्ध करती है ।

नागर ने ऐतिहासिक कथा को अपनाकर एक यथार्थवादी उपन्यास की निर्मिती की है। उन्होंने लोकविश्रुत् कन्नगी का चरित्र उच्च और पति परायणा के रूप में चित्रित किया है । कुलवधु कन्नगी को नारी सुलभ गुणों से युक्त दिव्य नारी के रूप में चित्रित किया है । वह एक आदर्श नारी की तरह वेश्या माधवी के चुंगल से बचाकर अपने पति को नवजीवन प्रदान करती है । तो दूसरी ओर माधवी को एक सामाजिक विडंबना के रुप में चित्रित किया है । वह अपनी बेटी को भविष्य में वेश्या के रूप में नहीं देखना चाहती । इसलिए अंत तक दुनिया से लड़ती है । वह न्याय माँगती है पर पराजित होती है, यही पराजय उसे विद्रोही बनाता है । अंत में वह जान जाती है कि पुरुष न तो स्त्री को सती बनाकर सुखी रख सकता है और न ही वेश्या बनाकर ।

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की विशेषता यह है कि नागर जी ने ऐतिहासिक कथानक को गहरे सामाजिक आशय से सम्पृक्त करके प्रस्तुत किया है । उपन्यास नारी समस्या से संबंधित होने के कारण युगों से पीड़ित नारी की व्यथा व्यक्त करता है । लेखक ने नारी शोषण की शाश्वत समस्या को इतिहास से खोज निकाला है । हिंदी उपन्यास साहित्य में सुहाग के नूपुर का विशेष महत्त्व इसलिए है कि उसमें नागर जी ने केवल वेश्या की वेदना का ही नहीं;बल्कि सती की प्रताड़ना का भी चित्रण यथार्थ रूप में किया है । यही अमृतलाल नागर की श्रेष्ठता और सफलता है । तात्पर्य - यह उपन्यास नारी जीवन के विविध रूपों को व्यक्त करता है ।

### 3.6 अमृत और विष - ई. सन 1966

'अमृत और विष' नागर का एक बृहद उपन्यास है । यह उपन्यास बीसवीं शताब्दी के समस्त सामाजिक परिवर्तनों का सांगोपांग, तटस्थ चित्रण प्रस्तुत करता है । उपन्यास का केंद्रीय पात्र अरविंद शंकर मध्यवर्गीय गृहस्थ है । उपन्यास का प्रारंभ अरविंद शंकर का षष्ठीपूर्ति समारोह से होता है । वह अपने अतीत और वर्तमान का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है । उसमें स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय समाज की मनोवृत्तियाँ और स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज का विश्रृखंलित रूप साकार हुआ है ।

उपन्यास के भीतर एक लघु उपन्यास चलता है, जिसका लेखक अरविंद शंकर है । उसका जीवन असंतोष, विषाद और पारिवारिक कटुताओं से भरा हुआ है । लेकिन उसकी पत्नी माया उसके दैनिक कार्यों में पूर्ण सहयोग देती है ; किंतु उनके लड़के घर से बाहर निकलकर शादी करते है । बेटी टी.बी. की मरीज होते हुए भी एक मुस्लिम युवक से शादी करना चाहती

है, किंतु मामला गर्भपात तक आकर रुक जाता है । उन्हें संतानों के कारण काफी दुख झेलना पडता है । ऐसी कटुतापूर्ण स्थितियों में उनकी षष्ठीपूर्ति का आयोजन किया जाता है । विधि की विडम्बना देखो कि, जिस कलाकार का साहित्यिक क्षेत्र में अपूर्व स्थान है वही "तन के ठेले पर लदा हुआ यह जीवन का भारी बोझ खींचते-खीचंते उसके प्राणों का भूखा अशक्त भैसां अब बेदम होकर जेठ की चिलिचिलाती धूप में तपती हुई सड़क पर गिर पड़ा है ।" [23]

अरविंद शंकर की षष्ठीपूर्ति के समारोह में उपस्थित लोगों में से किसी ने भी उनका साहित्य नहीं पढ़ा है । केवल औपचारिकता निभाने के लिए सभी लोग उपस्थित रहे है । लेखक के रूप में प्रतिष्ठा होते हुए भी वे तन, मन, धन से अशांत है । आदर्शवाद के बड़े-बड़े शब्दों को ओढ़कर वह आर्थिक दासता से संघर्ष करना चाहता है; परंतु पेट की भूख बुद्धि के सभी हथियार को मिथ्या, दंभ और खोखलेपन का जामा पहनाकर उसे चूर-चूर कर देती हैं ।

अरविंद शंकर के उपन्यास का नायक रमेश रद्धूसिंह की बेटी रानी से प्यार करता है । वह अपने भावी ससुर से कहता है - " आप आजाद भारत में इस तरह दो शरीफ युवक-युवतियों को, जो कि बालिग हैं, समझदार है, स्वतंत्र है, शरीफ आदमियों की तरह विवाह करके अपना संसार बनाना चाहता है, इस तरह अपमानित कैसे कर सकते है ।" [24] रमेश अपनी नवपरिणिता को पिता के घर में न लाकर नवाब अनवर अली के मकान में किराएदार बना कर ले जाता है । गोमती में जब बाढ़ आती है तो वह लोगों की मदद करता है । रमेश पहले रानी से प्रेमविवाह करता है ; लेकिन बाद में मकान मालिक की नातिन गैहाबानू के प्रति आकर्षित होता है । फिर भी नायक के सभी गुण उसमें विद्यमान है ।

प्रस्तुत उपन्यास में दूसरा चरित्र लच्छू गतिशील पात्र है । लच्छू पैसा और पोजीशन की कामना करनेवाला कुंठित पात्र है । वह कामातुर प्रौढ़ाओं द्वारा उन्नति की सीढ़ी पर सीढ़ी चढता है; किंतु उसका पतन भी होता है । वह इतना गिर जाता है कि अपने मित्रों का विनाश करने की सोचता है; लेकिन अंत में आदर्श मार्ग पर बढ़ता है । अंत में पछतावा व्यक्त कर वह सोचता है, कि जीवन में उसने क्या पाया ?

नागर ने उपर्युक्त दानों पात्रों के माध्यम से समाज सुधार का मार्ग अपनाया है । इसमें रूप्पनलाल धर्म-संस्कृति का नारा लगाकर समाज को अपने भ्रष्ट आचरण से गुमराह करनेवाला पूँजीपति है, जिसके दिन लद चुके हैं । इसी के साथ लाला बैजनाथ जैसे सभ्य परंतु अनैतिक रूप से पैसा कमानेवाले व्यक्ति भी है । रद्धूसिंह रानी के पिता जो रोटी-रोटी को मोहताज

होने पर भी अपने अभिजात्य संस्कारों को छोड़ने में असमर्थ है । इसमें अभिजात्य वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. आत्माराम खन्ना प्रतिकूल परिस्थितियों में विजय की कामना करनेवाला व्यक्तित्व है । बानों का चरित्र सनसनाहट पैदा करनेवाला आज के स्वतंत्र नारी समाज का प्रतीक है । जो जिंदगी का नक्शा अपने आप बनानेवाली युवती है ।

यह हिंदी का पहला उपन्यास है, जिसमें युवावर्ग के आक्रोश, परिवर्तनशीलता की तीव्र अकुलाहट, भावनाओं-आकांक्षाओं एवं संघर्ष का इतना सुक्ष्म अध्ययन उनके यथार्थ परिवेश में किया है । इसमें मध्यवर्गीय समाज की विभिन्न समस्याएँ सजीव रूप में उभर आयी है । हिंदु-मुस्लिम संघर्ष और सांप्रदायिक कटुता के मूल में स्वार्थी राजकीय नेता, वैयक्तिक अहं के लिए समाज में विष घोलनेवाले पूँजीपति आदि का पर्दाफाश किया है ।

### 3.7 सात घुँघटवाला मुखड़ा - ई. सन 1968

'सात घुँघटवाला मुखड़ा' यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है । अठारवीं शताब्दी के अंतिम पच्चीस वर्षों में अंग्रेज और फ्रांसीसी अपना साम्राज्य फैलाने तथा हिंदुस्तान पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए मराठा साम्राज्य को नष्ट करने में कार्यरत थे । यह कल्पना के आधार पर रोचकता बढ़ानेवाला उपन्यास है ।

इस उपन्यास के प्रमुख पात्र बेगम समरू को कई नामों से पुकारा जाता है - जैसे मुन्नी, दिलाराम, बेगम समरू और जुआना । वह एक कश्मिरी लड़की है, जिसके माँ-बाप मेरठ में रहते है । एक दिन वशीर खाँ के पिता द्वारा मुन्नी का अपहरण किया जाता है । वशीर खाँ के पिता की इच्छा थी कि वशीर उसकी सुंदरता पर लुब्ध न होकर अच्छी कीमत पर बेच दे । उसे अपनी परिणिता न बनाए । वशीर उसे बेहद पसंत करता है, उसे अपना बनाना चाहता है; परंतु पिता की आज्ञा के कारण रेनहार्ड के दूत टॉमस को दस हजार स्वर्ण मुद्राओं मे बेचता है । उस समय नवाब समरू आगरा में था । लेकिन बेगम समरू की और बूढ़े पति नवाब समरू से कामतुष्टि नहीं होती । तब वह टॉमस और वशीर द्वारा लाया गया फ्रांसीसी युवक लवसूल से संबंध बढ़ाती है ।

उपन्यासकार ने बेगम समरू को दो परस्पर विरोधी स्वभाव में दिखाया है । उसके चरित्र में कोमलता और कठोरता के दर्शन होते है । आहिस्ता-आहिस्ता राजनीति में उसकी पकड़ ढीली पड़ जाती है । बेगम समरू अनेक पुरुषों के अंकों में अपने शरीर को सौपंती है । फिर क्यों न उसका जीवन रंगीन न हो ? दिल्ली में वह टॉमस को पहली भेट में ही अपनी

काम-पिपासा को शांत करने के लिए अपनी ओर खींचती है । रात को अपनी दासी द्वारा बुलावा भेजती है । जब वशीर के द्वारा लवसूल का जुआना के सम्मुख लाया जाता है तो वह उसकी ओर झुकती है; परंतु एक साल तक खुद को संयमित रखती है । जुआना जब लवसूल से प्रेम बढ़ाती है, तो स्वाभाविक ही टॉमस और लवसूल में खींचातानी होती है । सैन्य प्रयाणों के अवसर पर वह लवसूल को साथ ले चलती है । जहाँ सेना का पडाव हो वहाँ उसके साथ वह रंगरलियाँ मनाती है । यह बात सभी सेना को समझती है । लवसूल उच्च पदस्थ अधिकारियों का अपमान करता है । एक दिन दोनों को पलायन करते वक्त पकड़ लिया जाता है । लवसूल अपने ही तमंचे से आत्महत्या करता है । जुआना भी आत्महत्या करना चाहती है, लेकिन सैनिक बचाते है ।

इस प्रकार 'सात घुँघटवाला मुखड़ा' उपन्यास में लेखक ने बेगम समरू का जन्म सौंदर्य का स्वर्ग कश्मीर में दिखाया है । उसे कामुक युवती के रूप में चित्रित किया है, जैसे उसके जीवन का लक्ष्य वहीं हो । लवसूल की हत्या के बाद उसे सरधना लाया जाता है । वहाँ पर टॉमस आकर सुव्यवस्थित शासन कायम करता है । बेगम समरू अपने पति रेनहार्ड के साथ राजनैतिक मुद्दों पर बातचीत कर अपने वाक्चातुर्य से उसे प्रभावित करती है । तो दूसरी ओर नवाब समरू तो सिर्फ दिखावे के लिए ही उसका पति था । जो अपनी छोटी बेगम द्वारा छला जाता है । इस धोखें से वह आत्महत्या करता है । उस समय जुआना "गम की साक्षात् मूर्ति बन गई ।" [25] फिर वह अपने रियासत की सर्वेसर्वा बन गई । पाठकों के सामने वह युरोपीयों की भोग्या, ईमान बेचनेवाली, काम के प्रति सचेष्ट नारी और साथ ही कड़े अनुशासन और रियासत में दखल देनेवाली भूखी शेरनी के रूप में चित्रित हुई है । वह लवसूल से औरत की मजबूरी के बारे नें कहती है - " पागल तुम मेरे नन्हें - मुन्ने हो औरत के दिल की मजबूरी को नहीं समझ सकते ।" [26]

भारतीय इतिहास में यह काल महलों और हरमों में होनेवाली ऐय्याशी, काम-पिपासा, परस्पर अविश्वास, द्वेष, घोर पतन का काल है । फिर वह देशी शासक हो अथवा विदेशी यहाँ के समाजिक जीवन का पतन निरंतर होता आया है । एक जगह पर बेगम समरू की पाश्विकता चित्रित की है । मुश्तरी नवाब समरू की मुँह बोली दासी है; इस कारण बेगम समरू के मन में ज्वाला उत्पन्न होती है और वह मुश्तरी को दीवार में चुनवाने का आदेश देती है । नागर ने बेगम समरू को कठोर, पाश्विक, हिंसात्मक, निर्दयी स्त्री के रूप में भी चित्रित किया है।

अंत में उसे अपने किये पर पछतावा होता है । वह एकरूपता से भगवान की शरण में जाती है ।

तात्पर्य - इस प्रकार ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ यह काल्पनिक मनोरंजक उपन्यास है ।

### 3.8 एकदा नैमिषारण्ये - ई. सन 1968

'एकदा नैमिषारण्ये' उपन्यास प्राचीन भारत की धार्मिक एवं भावात्मक एकता को उद्‌घाटित करता है । यह एक सांस्कृतिक उपन्यास है । उपन्यासकार ने चन्द्रगुप्त कालीन इतिहास का लेखा-जोखा देने की भरपूर चेष्टा की है । इसमें धार्मिक आंदोलन के जरिए एक लाख श्लोकोंवाली महाभारत का पारायण तथा अन्य पौराणिक ग्रंथों के पठन-पाठन को प्रश्रय दिया है । इसमें पात्रों की अवतारणा परम्परानुसार हुई है - जैसे नारद, भार्गव, सोमाहुति और महाराज गणपति आदि । गणपति को, राजनीति में समन्वयकारी प्रवृत्ति का पुरस्कर्ता दिखाया है । वे शांति और एकता स्थापित करने के पक्ष में है ।

उपन्यासकार ने कल्पना के द्‌वारा ऐतिहासिकता को विश्वनीय बनाया है । राजा और नरेशों को राजनीति सीखाने में विद्धान आचार्य और आश्रमों के कुलपतियों का महान योगदान है । इस दृष्टि से आयोध्या के तांत्रिक गुरु और माँ वशिष्ठी, लखनऊ के महन्त और भारतचंद्र, घुमक्कड़ नारद, सोमाहुति भार्गव, मथुरा के बौद्‌धाचार्य आदि के विचार जो भारत के लिए आवश्यक है, उन्हें देने का प्रयास किया है । नारद और सोमाहुति ने महासत्रों का आयोजन किया है । गणपति ने महाभारत जैसे महाकाव्य का लेखन कार्य किया है । अनेक लोककथाओं के समन्वय और एकत्र करने के लिए पुराणों और भागवद् के मूलग्रंथ श्रीमद्‌भागवत् की रचना कर वैष्णव धर्म का प्रचलन किया है ।

चंद्रगुप्त काल तक आते-आते अनेक सामाजिक रूढ़ियाँ तथा वर्णव्यवस्था फैल चुकी थी । गणपति के सामाजिक-व्यवस्था संबंधी प्रश्न पर भार्गव उत्तर देते है - "यदि जाति ब्राह्‌मण हुआ करती राजन्, तो अप्सरा पुत्र वशिष्ठ कभी ब्राह्‌मण न माने जाते । दासीपुत्र 'कवष' और 'एलूष' को क्या हम पूज्य भाव देते हैं ? भगवान वेदव्यास मल्लाहिन के गर्भ से जन्मे थे और पाराशर चाण्डाली के पुत्र थे । जाति इनमें से एक के भी ब्राहमणत्व प्राप्त करने में बाधा न बन सकी । ..... ब्राहमण मनुष्य की वह दृष्टि है जो काया और मानवी चेतना के विभिन्न भेदों

की दीवार हटाकर विशुद्ध सत्य को देखती है ।" [27] उपन्यासकार ने वर्ण व्यवस्था को जन्मना न मानकर कर्मणा और जीवन से संबंधित माना है ।

उस समय धार्मिक संघर्ष बढ़ रहा था । ब्राह्मण के साथ-साथ क्षत्रिय और वैश्य, बाहुबल और पैसों के बल पर मान-सम्मान पाते थे । ब्राहमणों में शिव और विष्णु के पूजक एक-दूसरे के विरोधी थे । बौद्ध और जैन धर्म के अलग-अलग सिद्धांत थे । सभी धर्मों में अलग-अलग प्रथा-परम्परा बढ़ती ही जा रही थी । विदेशी धर्मों का प्रभाव भारतीय समाज पर था । तब 'भार्गव ऋषि' इज्जा नामक पात्र को उपदेश देते है - "जिसने योगद्वारा सृष्टि के विधान में गति करके तुम्हारे लिए परमतत्व को पहचाना वही भारत आज परिस्थिति रूपी शत्रु से पराजित और खण्डित होकर बिखर पड़ा हैं पूजा तप और तेज की होती है । यदि वही नष्ट हो गया तो सबकुछ नष्ट हो गया समझो ।" [28]

बौद्ध और जैन मतों का सबसे ज्यादा प्रभाव हिंदु धर्म पर पड़ा जिसमें निवृत्ति को प्रोत्साहन दिया गया। निवृत्ति याने निस्सार या दुःखपूर्ण जीवन । इनके मतानुसार जीवन से घृणा और वैराग से लोगों का जीवन विरक्त कर दिया है । उपन्यास में नारद निवृत्तिवादी तथा कण्ववंश के देवव्रत बनकर सामने आते है । 'एकदा नैमिषारण्ये' के अनुसार वेद, उपनिषद, पुराण, ज्योतिष आदि अनेक शास्त्रों के पंडित, राजनीति और व्यवहारशास्त्र के महर्षि नारद संगीत और नृत्य के महापंडित थे । भार्गव नारद के सहपाठी है । जब नारद अपना आत्मसंयम खोते है तो भार्गव उन्हें प्रबोधित करते है । सोमाहुति भार्गव 'इज्या' को समर्पण कर उसे अपनी बनाते है । इज्या एक अद्वितीय पुत्र को जन्म देकर अंतर्धान होती है । सोमाहुति इज्या की स्मृति मन में अभी तक समेटे हुए है । सोमाहुति को उनके पिता ने एक लाख श्लोकोंवाली 'महाभारत' कंठस्थ करवाई थी । तब भृगुवत्स ने दुष्टता करके उसे नष्ट किया । तब सोमाहुति महाराज गणपतिद्वारा 'महाभारत' लिखवाते है । नागर ने 'महाभारत' लिखनेवाले व्यास की उपाधि सोमाहुति को दी है ।

प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने प्रचुर कल्पना का प्रयोग किया है । 'एकदा नैमिषारण्ये' की कथावस्तु पौराणिक, राष्ट्रीयता और आंतरराष्ट्रीयता के सूत्रों के एकीकरण पर आधारित है । भारतीय परम्परा में नारद का चरित्र संपूर्ण पृथ्वी पर भ्रमण कर मानव आक्रोश और प्रथाओं, रूढ़ियों को तूल देकर क्रांति का बीजारोपण करना है । नारद कभी मथुरा में राज्य परिवर्तन करते है तो कभी विन्ध्यशक्ति से वार्तालाप कर राष्ट्र के एकीकरण के लिए प्रेरणा देते है ।

तात्पर्य - इस प्रकार नागर ने पौराणिक और आधुनिकता का समन्वय प्रस्थापित करने का प्रयत्न किया है ।

### 3.9 मानस का हंस - ई. सन 1971

अमृतलाल नागर का 'मानस का हंस' हिंदू मानस का साक्षात् दर्पण है । महात्मा तुलसीदास के चरित्रद्वारा नागर ने यहाँ तत्कालीन समाज के आदर्शों को प्रस्तुत किया है । तुलसी के व्यक्तित्व का समन्वयात्मक दृष्टिकोण पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया है । उपन्यास के नायक तुलसी अपने जीवनकाल के अंतिम एक वर्ष में आत्मलोचन कर अपने मानस के हंसद्वारा जीवन के अनुभवों का चयन करते हैं । जो तुलसी के जीवन का मेरूदण्ड है ।

तुलसी के जीवन का प्रारंभ संघर्षमयी वातावरण में होता है । अभुक्मूल नक्षत्र में जन्मे शिशु अपने माता-पिता के लिए कालरूप सिद्ध हुए । तुलसी के जन्म के समय माँ हुलसी की मृत्यु से पिता आत्माराम उसे अपनी आँखों से हमेशा के लिए दूर करवाते है । उनकी दासी उसे पार्वती नाम की भिखारन के हाथों सौंपती है । पार्वती उसका नाम रामबोला रखकर पालन-पोषण करती है । पार्वती माँ की मृत्यु के पश्चात वे हनुमान मंदिर में आश्रय पाते है । बाद में हताश रामबोला घाघरा और सरयू नदी के पावन स्थल पर महावीर के मंदिर में शरण लेता है । वहीं पर बाबा नरहरि से मुलाकात होती है । बाबा उसे अयोध्या ले जाकर उपनयन संस्कार करवाते है । तुलसी का पत्ता उनके सिर पर गिरने से उनका नाम तुलसीदास रखा गया ।

उपन्यास का प्रारंभ तुलसी की पत्नी रत्ना मृत्युशय्या पर पड़ी अपने प्राणधन की राह देख रही है । तुलसी वचनानुसार समय पर पहुँचकर अपनी अर्धांगिनी की अंतिम इच्छा पूर्ण करते है और रत्ना अंतिम क्षणों में सुहाग के सिन्दुर से दीप्त अपनी महायात्रा की ओर प्रयाण करती है । 90 वर्षीय तुलसीदास अपनी मोह-माया से संघर्ष करनेवाली अपनी प्रिया के अंतिम दर्शन पर भाव-विव्हल होते है । उसकी स्मृति में खो जाते है । रत्नावली और तुलसी अपने जीवन में केवल चार बार मिले हैं । रत्ना ब्याहुली आती है । परम अध्ययनशील और असाधारण प्रतिभासंपन्न रत्ना को पति के रूप में तुलसी मिलें, जो असाधारण मेधा और प्रभु राम के परम पावन प्रेम से अप्लावित निश्चल हृदयवाले है । प्राणवल्लभा रत्ना से तुलसी ससुराल में जाकर अपनी रूठी प्रिया को बाहों में लेकर कहते है मेरी जन्मकुंडली में लिखा है - या तो करोड़पति

बनूँगा या फिर विरक्त बनूँगा । इस बात पर दोनों के अहम् टकराकर वाद-विवाद होता है । रत्ना उन्हें विरक्त बनने को कहकर खुद अकेली रहती है ।

कुछ दिनों बाद तुलसी चित्रकूट, काशी, प्रयाग, आयोध्या आदि तीर्थक्षेत्रों पर जाकर कथा-प्रवचन देने लगे । उन्होंने आयोध्या में अनेक स्थानों पर रहकर 'रामचरित मानस' की रचना दोहा-चौपाई छंद में की । चित्रकूट से काशी की ओर जाते समय रास्ते में अमानवीय अत्याचारों के प्रतीक स्वरूप मनुष्यों को पेड से लटका हुआ पाते है । तुलसी परम संत थे परंतु विरोधियों की कमी नहीं थी, उनमें रविदत्त लाल (तांत्रिक) प्रमुख थे ।

तुलसीदास के नारी आकर्षण का चित्रण भी नागर ने किया है । उन्हें मोहिनी नाम की वेश्या से प्यार होता है । उन्हें जगत् कलरव सुनाई देता है - "यह देखो, श्रीराम के चरण-कमल छोड़कर वेश्या के तलवे चाटनेवाला कुत्ता ।" [29] एक वक्त ऐसा आता है कि मोहिनी या राम ? वे तो दोनों से प्रेम करते है । मोहिनी जब भाग निकलने की तैयारी में आती है तो वे पीछा छुड़ाने का प्रयास करते हैं - "नहीं, मैंने तुमसे प्रेम नहीं किया । मैं वस्तुतः तुम्हारे रूप और गायन कला पर आसक्त होकर तुमसे वह अनुभव पाने का अभिलाषी हूँ, जिसे पाकर ब्रह्मचारी गृहस्थ हो जाता है और तुम भी निश्चय ही कामक्षुधावश मुझपर आसक्त हो । यह प्रेम नहीं है, तृष्णा है । प्रेम मैं राम से करता हूँ ।" [30] इस तरह से उन्होंने मोहिनी से पीछा छुड़ाया ।

तुलसी के मानस पटल पर रत्ना कौंध जाती है । वह तुलसी के लिए 'आत्मलोचन रूपिणी अलकनन्दा है' । तुलसी कभी वर्तमान में तो कभी अतीत में झाँकते है । तुलसी और रत्ना के सभी प्रसंग नागर ने मार्मिक और करुण रूप से चित्रित किये है । रत्ना ने ही तुलसी को राम रूप बनाया । उनकी तपस्या रत्ना के कारण ही दिव्य और अलौकिक बन सकी । तुलसी रत्ना के रूप सौंदर्य को देखकर रामभक्ति भूल जाते है ; परंतु रत्ना ऐहिक सुख पाकर भी भगवत्भक्ति को नहीं भूली । रत्ना तुलसी को इस 'अस्थि चरममय देह मम' की आसक्ति से छुड़ाती है । ऐसी थी प्रेरक-शक्ति रत्ना जिसने तुलसी को उद्बोधन देकर भावी समाज के लिए अत्यंत मेधावी सुधारक प्रस्तुत किया ।

'मानस का हंस' नागर की एक महत्वपूर्ण और सफल कृति है । उपन्यासकार ने हंस बनकर मोती चुगने का प्रयास किया है । इसमें जनवादी दृष्टि को रूपायित किया है ।

परिणामतः उपन्यास रोचक बन गया है । तात्पर्य - नागर का यह उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण और सफल माना गया हैं ।

3.10 <u>नाच्यौ बहुत गोपाल</u> - ई. सन 1978

'नाच्यौ बहुत गोपाल' यह एक सामाजिक उपन्यास है । इसमें ग्रामीण समाज के सर्वथा उपेक्षित, अछुतों में भी अछूत मेहतर वर्ग के जीवन की अंतरंग झाँकी प्रस्तुत की गई है । नागर ने इन लोगों का समाज-जीवन इन्हीं लोगों के 'इंटरव्यू' के द्वारा प्रस्तुत किया है ।

इस उपन्यास की नायिका निर्गुणिया ब्राह्मण, सुसंस्कृत परिवार की लड़की है । बचपन में ही माँ की मृत्यु के कारण उसें नाना-नानी के पास रखा जाता है । उसके नाना कथावाचक, व्याकरणाचार्य और शास्त्री थे । बचपन में निर्गुनिया को किसी कारण से अछूत बस्ती में रहना पड़ा तब उसे शुद्धिकरण के संस्कारों से गुजरना पड़ा । शास्त्री पिता की पुत्री होने के कारण निर्गुनिया की माँ पतिव्रता थी । इसके विपरीत उसके पिता कुसंस्कारों में पले थे । उन्होंने अपने मालिक के बहु के साथ अनैतिक संबंध रखे थे । उसकी माँ पिता की दुत्कार सहते-सहते मर गई । निर्गुनिया के पिता उसे एक दिन मालकिन के यहाँ ले गए । पिता के मालिक रायसाहब पंडित बटुक परसाद ऊँचे फुल के ब्राह्मण होते हुए भी खुलेआम रंडी रखते थे । उनकी बहु अम्मा निर्गुनिया के पिता के साथ-साथ गुरखा के साथ भी नाजायज संबंध रखती है । बाद में गुरखा पर चोरी का इल्जाम लगाकर उसे बाहर निकालती है । लेकिन उसकी कामाग्नी नहीं बुझ पाती । वह बसंतलाल मास्टर से अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए संबंध रखती है । वह निर्गुनिया की भी छेड़छाड़ करती है ।

निर्गुनिया कहती है उसका भाग्य ही खोटा था कि, "ननिहाल के स्वर्ग से वह बटुक महाराज की नर भूखी भेडियन की मांद में फेंक दी गई । निर्गुन का भाग ही ऐसा खोटा था कि जिसे अमृत का कटोरा बनाकर पीना चाहा था वह हाथों में आते ही कालकूट विष बन गया ।" [31] निर्गुनिया अम्मा के गंदे माहौल में अपने आप को बचा न सकी । वह समय से पहले औरत बनी । उसके जीवन में पाँच पुरुष आते है । उसका बच्चा गिरवाकर उसके पिता उसकी शादी मसुरियादीम महाराज के साथ कराते है । उसकी प्यास बुझ नहीं पाती और वह मोहना के साथ भाग जाती है । मोहना मेहतर समाज का था । ब्राह्मणी होते हुए भी वह मोहना के साथ शादी करती है । लेकिन मोहना पुरुषी अंहकार नहीं भूलता । वह उसे मामा-मामी के पाँव छूने के लिए कहता है ; वह कहता है मैंने इश्क किया है अपना धरम-ईमान

नहीं बेचा । वह उसे छोडने के लिए भी तैयार होता है । निर्गुनिया ब्राहमणी होत हुए भी शराब पीती है, सुअर का मांस पकाकर खाती है । खुद सोचने पर मजबूर होती है कि, "इतना सबकुछ करने के बाद भी कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रही । मरद की जात निगोड़ी । कैसे बीतेगी सारी जिंदगी ? " [32] मोहना की मामी उसे बात-बात पर गालियाँ देकर जुर्म ढोती है, पैर दबवा लेती है ।

प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक समस्या को भी चित्रित किया गया है । नौकरी के लिए दरोगा और जमादार मजीद से रिश्वत के साथ बीवी की भी माँग करते है । मजीद उनकी माँग पूरी करता है । महर्षि वाल्मिकी की जयंती पर मजीद और उसके साथी चंदा इकट्ठा करने जाते है ; तब महाजन के आदमी गर्दन दबाकर पैसे छीनते है ।

मेहतर समाज के लोग हिंदू-मुस्लिम दोनों देवता याने राम और अल्ला का नाम लेते है । इनके बिरादरी में दोनों रिवाज चलते है । इसमें और एक ख्रिश्चन सोसायटी भी है । उच्च कुल के हिंदू अथवा मुसलमान ईसाई बनते हैं लेकिन वे नीच कुलीन ईसाईयों से शादी नहीं करते । इस मेहतर समाज का संबंध केवल ऊँचे वर्ग से ही नहीं ; बल्कि अन्य हरिजन जाति से भी है । गांधीजी द्वारा किये गये अछुतोद्धार के प्रयत्न से भले ही इस निम्न वर्ग के लोगों में चेतना जाग गई है वे अपने न्याय के लिए संघर्ष करने के लिए भले ही तैयार हो गये हो, लेकिन निर्गुनिया जानती है, कि इस वर्ग संघर्ष की जडें इतनी मजबूत है कि उन्हें आसानी से उखाड़ नहीं सकती ।

नागर ने निर्गुनिया की कथा के द्वारा समस्त नारी जाति की व्यथा-कथा कही है । मेहतर समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । दिन-रात इतनी मेहनत करने के बावजूद भी इन्हें जीवन की हर सुख-सुविधा, शिक्षा आदि से वंचित रहना पड़ता है । उच्च वर्गीयों ने इस जाति का दमन किया है । उन्हें गरीब रहने के लिए मजबूर किया है । उन्हें सुबह छः बजे से गलियाँ साफ करना तथा पच्चीस घरों का काम करना पड़ता है । बदले में दुअन्नी-चवन्नी तथा गालियाँ और जूते भी खाने पड़ते है । इस प्रकार नागर ने मेहतर समाज को लक्ष्य बनाकर उन पर किये जानेवाले अन्याय-अत्याचारों का यथार्थ चित्रण किया है । उसमें वे सफल हुए हैं ।

### 3.11 खंजन नयन - ई. सन 1981

अमृतलाल नागर का 'खंजन नयन' उपन्यास सूरदास के जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। सूरदास को जन्मांध मानकर ही नागर जी ने उनकी मनोभूमिका लिखी है। 'खंजन नयन' ऐतिहासिक चरित्र-प्रधान उपन्यास है। इसकी कथावस्तु सुगठित और रोचक है।

परसोली गाँव में भागवत महाराज के यहाँ सूर्यनाथ का जन्म हुआ। इस जन्मांध बालक की आवाज में इतनी मिठास थी कि लोग उसकी ओर आकृष्ट हो जाते। उसका यह गुण देखकर पिता ने सूर्यनाथ को पंडित सोमेश्वरनाथ की पाठशाला में भेजा। उसके मधुर स्वर से उसकी लोकप्रियता बढी लेकिन उनके बड़े भाईयों की आँखों में खेलने लगा। भाईयों के अन्याय आत्याचारों से तंग आकर उसने घर त्याग दिया। नाव में सफर करते वक्त नाव पर हमला होता है, तब कालू केवट सूरदास को बचाकर मणिकर्णिका कुंड के निकटवाली एक पुरानी कोठरी में रखता हैं। वहाँ पर सूर के भविष्य कथन से सेठ चंदनमल का माल मिल जाता है। इससे सूर की महन्ता दिन-ब-दिन बढती है। कालू और सेठ चंदनमल सूर के शिष्य बनते है। वहाँ पर सूर की भेंट कालू की बहन से होती हैं। दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते है। सूर के मन संघर्ष चलता रहता है कि एक ओर प्रेम तो दूसरी ओर भक्ति।

सूरदास भविष्य कथन और मधुर गायन से लागों को अपनी ओर आकर्षित करने में सिद्धहस्त होते है। लेकिन मथुरा में कुछ लोग मिलकर उनके खिलाफ षड्.यंत्र रचते है। उन्हें हमेशा किसी न किसी कारण से कष्ट देते हैं। सूरदास और केतों के बारे में गलत बातें समाज में फैलाई जाती है। लेकिन लोगों पर इसका कुछ भी असर नहीं होता। सूर की कीर्ति तेज गति से सभी ओर फैलती है। सूर आयोध्या से काशी आते है। वहाँ उनकी मुलाकात फकीर दिलखुश शहा से होती है। वहाँ पर 'श्रीमद्भागवत्' की रचना करते है। वहाँ पर भी कुछ मल्ल-मार्तंड उनके खिलाफ षड्.यंत्र रचकर उन्हें बाहर निकालना चाहते है। आगरा में उनका भक्त चंदनमल उनके लिए कुटी बनवाता है। वहाँ पर उनकी महत्ता बढने से उनके जीवन को चार चाँद लग जाते है। गोवर्धन पर पाठोत्सव करने के लिए वल्लभाचार्य आते है। लेकिन उनसे भेंट न होने से वे दुःखी होते है। वल्लभाचार्य जब दूसरी बार कृष्ण मंदिर बनवाने के लिए गोवर्धन पर आते है, तो सूरदास को उनके दर्शन होते है। सूर के विनय-पद सुनकर वल्लभाचार्य उन्हें भगवत् - यश का वर्णन करने का उपदेश देते हैं। आचार्य के उपदेशानुसार सूर श्रीनाथ के मंदिर में हरदिन भजन-कीर्तन करते हैं।

वहाँ पर सूर की मीराबाई से तथा तुलसीदास से भेंट होती हैं । अपने जीवन में भगवत् लीला में रमे सूरदास के जीवन का अंत पद गाते-गाते हुआ है । "खंजन नयन की सार्थकता इसी में है कि जिस व्यक्ति को विधाता ने तन की आँखें नहीं दी उसी को मन की आँखे देकर दिव्यदृष्टि संपन्न बना दिया । सूरदास ने अपने खंजन नयनों के रूप रस में मत होकर अतिशय चारू चपल नयनोंवाले अपने इष्ट देव के दर्शन किये हैं ।" [33] भगवान कृष्ण का रूप वे अपनी मन की आँखों से देखते थे । अखंड भजन, कीर्तन से लोगों को सद्भावना, सदाचार, विवेक से रहने का संदेश आजीवन देते रहें । 'खंजन नैन रूप रस भाते' यह पद गाते-गाते उनके प्राण पखेरू उड़ गए । लोगों के आगे अपना आदर्श रखकर वे महाप्रयाण की ओर बढे ।

तात्पर्य - अमृतलाल नागर ने 'खंजन नयन' उपन्यास के माध्यम से सूरदास का आदर्श जीवनवृत्त बनाया है । जो अत्यंत प्रभावी हुआ है ।

### 3.12 बिखरे तिनके - ई. सन 1982

'बिखरे-तिनके' उपन्यास में देश में वर्तमान राजनीति की अव्यवस्था का पर्दाफाश किया है । साथ ही अनैतिक व्यवहार और भ्रष्टाचार को उजागर करना ही उपन्यास का मूल उद्देश्य है । नागर ने सरकारी अफसरों के आपसी कलह और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष दिखाया है ।

यह कहानी बिल्लू के घर से शुरू होती है । बिल्लू के पिता नगरपालिका के हेल्थ डिपार्टमेन्ट में नौकरी करते थे । उन्होंने हजारों रूपये अनीति के मार्ग से हड़प किए थे । उन्हें तीन बेटियाँ और चार बेटे थे । उन्होंने सभी बेटियों का विवाह अच्छे से कराकर दो बेटों को नौकरी लगवाई है । तिसरा बेटा स्मगलर है । चौथा बेटा बिल्लू एल.एल.बी. कर रहा है । वह हर काम पिता की मर्जी के खिलाफ करता है । घर छोडकर छात्रों को संगठित कर 'छात्रसंगठन' की स्थापना करता है ।

इस उपन्यास में सुहागी नाम का युवक सरसुतिया से प्यार करता है । सुहागी आहिर जाति का और सरसुतिया हरिजन इस कारण समाज उन्हें विवाह की मान्यता नहीं देता । बिल्लू और उसके साथी उन दोनों का आंतरजातीय विवाह एक हजार छात्रों की उपस्थिति में करवाते है । विवाह के बाद स्वतंत्रकुमार सुहागीपर चोरी का आरोप कर जेल भिजवाता है । बाद में वह सरसुतिया का अपहरण करता है । बिल्लू स्वतंत्रकुमार को राजनीतिक दबाव डालकर गिरफ्तार करवाने के लिए अपने साथियों को लेकर बबलू राठौर की कोठीपर चला जाता है ।

बबलू छात्रों की मदद से गृहमंत्री बनता है । लेकिन बाद में सुहागी और सरसुतिया की मदद करने में असमर्थता व्यक्त करता है । बबलू की गद्दारी से सभी निराश होते है ।

नगरपालिका के अस्पताल का डॉ. गोयल और मेट्रन सुनंदा के अनैतिक संबंधों की कहानी रिपोर्टर चक्रपाणि दैनिक 'आजकल' में छापता है । मुसीबतों की मारी सुनंदा संतोषी के पास जाकर उसकी वाईफ बनकर हाँगकाँग चली जाती है । उधर सुहागी जेल से छूटकर आता है । सुरसुतिया के अपहरण की खबर सुन वह स्वतंत्रकुमार के खून का प्यासा बनता है । बिल्लू और उसके साथी स्वतंत्रकुमार से बदला लेने के लिए चुन्नीलाल के गोदाम पर हमला बोलते है । चुन्नीलाल पुलिस द्वारा बिल्लू और उनके साथियों को गिरफ्तार करवाता है । बबलू पुलिस को आदेश देता है कि युवकों को रिहा कर दिया जाए और सरसुतिया को घर पहुँचाया जाए । लेकिन सरसुतिया की हत्या से सुहागी भी आत्महत्या करता है । शहर में बहुत बड़ा दंगा होता है । सुहागी के साथी पूँजीपतियों का जीना हराम कर देते है । बबलू सुहागी और सरसुतिया के लिए झूठे आँसू बहाता है । बिल्लू और उसके साथियों के खिलाफ वॉरंट निकालकर उन्हें पुलिसद्वारा गिरफ्तार करवाता है । बिल्लू को बबलू की गद्दारी पर आश्चर्य होता है । बिल्लू चुन्नीलाल से बदला लेने के लिए छिदा डकैत से मिलता है । लेकिन अंत में छिदा के साथी पुलिस के हाथों पकड़े जाते है । छिदा अपने हाथों से माथे पर गोली चलाकर मौत को गले लगाता है ।

गुरूसरण की अखबारी अफवाओं के कारण डॉ. गोयल को सस्पैंड किया जाता है । गुरूसरण खुश होता है । बिल्लू का बड़ा भाई विदेश यात्रा करके शहर लौटता है । उसके स्वागत का आयोजन किया जाता है । वॉरंट से छुटकारा मिलते ही बिल्लू और साथी शहर आते है । बिल्लू के पिता इन लड़कों को प्रलोभन दिखाते है कि स्वागत समारंभ के प्रबंध के लिए वे रोजाना सौ रूपये देंगे । इस प्रलोभन से बिल्लू के साथी एक-एक कर सब चले जाते है । बिल्लू उन्हें रोकना चाहता है लेकिन बेरोजगारी से ग्रस्त सत्तार उसे कहता है, "माँ-बाप, दो ब्याहने लायक बहनें..... उनके लिए रोटी कमाना ही मेरे लिए सच्ची देश सेवा है ।" [34]

इस प्रकार अमृतलाल नागर ने 'बिखेर-तिनके' उपन्यास में यह स्पष्ट किया है, कि वर्तमान युवा पीढ़ी अर्थवैषम्य के प्रति सजग है । वर्तमान राजनेता रोजी रोटी से चिंतीत युवा पीढ़ी का लाभ किस प्रकार उठाते है, इसका चित्रण नागर जी ने बबलू राठौर के माध्यम से

किया है । तात्पर्य - समाजवादी व्यवस्था के आकांक्षी युवक बिखरे हुए तिनकों की भाँति जीवन पथ पर इधर-उधर बिखर जाने का यथार्थवादी चित्रण इस उपन्यास में हुआ है ।

3.13 अग्निगर्भा - ई. सन 1983

नागर का 'अग्निगर्भा' उपन्यास शुद्ध सामाजिक उपन्यास है । इसमें सीता और रामेश्वर के माध्यम से दहेज समस्या का व्यापक रूप में चित्रण किया है । उपन्यास का मूल विषय दहेज के नाम पर किये जानेवाले नारी शोषण को स्पष्ट करना है । यह उपन्यास आधुनिक मध्यवर्ग के विश्रृखंलित जीवन को प्रकट करता है ।

इस उपन्यास की नायिका सीता पाण्डे एम.ए. में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होनेवाली प्रखर बुद्धिमान मध्यवर्गीय युवती है । लेकिन उसे कहीं पर भी नौकरी नहीं मिलती । पिताजी की सीमित आय पर ही परिवार चलता है । उसकी दोनों सहेलियाँ मैत्रेयी पी.एच.डी. है और कुसुम धनवान पति पाकर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी है । सीता के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह कुछ नहीं कर पाती । उसने लिखे निबंध को 'लेडी प्रभावती स्वर्ण पदक' प्राप्त हुआ है । जैसे-तैसे वह बी.एड्. करती है । माता-पिता दहेज देने में असमर्थ होने के कारण शादी नहीं हो पाती । सीता अपनी सहेली के माध्यम से दुलारीदेवी महाविद्यालय में समाजशास्त्र के रिक्त पद पर नौकरी पाना चाहती है । उसे वहाँ पर अध्यापिका की नौकरी मिलती है । उस कॉलेज के अधिक्षक रामेश्वर के साथ वह प्यार करने लगती है ।

रामेश्वर सीता के रमनीय रूप के कारण आकर्षित नहीं है ; बल्कि सीता उसे सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी के समान लगती है । रामेश्वर उससे शादी करना चाहता है, लेकिन उसके घरवाले बिना दहेज के शादी के लिए राजी नहीं होते । उनका मन रखने के लिए रामेश्वर 15 हजार रूपये नकद और 5 हजार रूपये का कागज बनवाता है । उनकी शादी होती है । शादी के बाद सीता की सारी कमाई रामेश्वर लेता है । सीता को वह अध्यापिका से विभागाध्यक्ष और उसके बाद प्रिन्सिपल बनाकर धन कमाता है । उसे मायके नहीं भेजता । एक बार सीता का भाई बीमार होने से उसे वह दो सौ रूपये देती है । तो रामेश्वर उससे झगड़ा कर भला-बुरा कहता है । तब वह स्वाभिमानी स्त्री के रूप में जीवनयापन करने की ठान लेती है । वह कहती है, "तब मैं भी अपने अधिकारों के मामले मे समझौता नहीं करुँगी । आखिर पढ़ी - लिखी हूँ, मेरा भी स्वाभिमान है ।" [35]

रामेश्वर और उसके घरवाले सीता को घर से बाहर निकालते है । ऐसी स्थिति में वह एक किराए के मकान में रहती है । पड़ोस में गुलशनराय का परिवार रहता है । गुलशनराय के घरवाले उसकी बहु पर अन्याय-अत्याचार करते रहते है । सीता सोचने लगती है कि आज भी दहेज के कारण पारिवारिक कलह, उच्च अभिलाषा, नारी की विवशता आदि स्थिति स्वातंत्र्यपूर्व काल से वैसी की वैसी ही है । इतना पढ़ने-लिखने के बाद भी इन समस्याओं से सभी स्त्रियों को छुटकारा नहीं मिल सकता । वह दहेज प्रथा के विरुद्ध आंदोलन करने का निश्चय करती है । इस आंदोलन के बाद रामेश्वर को सीता के साथ किए हुए अन्याय-अत्याचार का पछतावा होता है और वह सीता से माफी माँगता है । उसे घर ले जाता है । प्राचार्य पद देता है लेकिन वह इन्कार करती है । जब वह अपने पति के साथ गाडी में बैठकरन जाने लगती है तो गुलशनराय का बेटा उसपर गोली चलाता है । इस प्रकार सीता के जीवन का दर्दनाक अंत होता है । नारी अधिकारों के लिए लड़ते-लड़ते सीता अपना बलिदान देती है । वस्तुतः सीता मरती नहीं है, वह तो अग्निगर्भा है, यह दिखाने की कोशिश नागर ने की है ।

सीता के माध्यम से नागर ने भारतीय नारी का चित्रांकन किया है । बरसों से नारी पुरुष की दासी बनकर उसके अन्याय-अत्याचार सहती रही है । नागर ने इस उपन्यास के माध्यम से नारी मुक्ति को प्रधान अंग बनाया है । इसीलिए अंत में सीता के विद्रोही रूपद्वारा पुरुषों को सबक सीखाया है । लेकिन अंत में वह अग्निगर्भा नहीं लगती सामान्य दुर्बल स्त्री की भाँति गुलशन के बेटे द्वारा हत्या की जाती है । तात्पर्य - हमारे देश की सबसे बड़ी ज्वलंत समस्या को चित्रित करने में नागर को सफलता मिली है ।

## निष्कर्ष -

गदय साहित्य के महान प्रणेता, जीवनगत आस्थाओं के सजग प्रहरी, हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार का बाहय व्यक्तित्व स्थूल है और अंतर्गत व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में झाँकता हैं । इस चेतनाशील कलाकार का पौरुषेय संवेदनशील हैं । समाज के विविध वर्गों में वे पूरे सिद्धहस्त हुए हैं । उपन्यासकार नागर में मौलिक उद्भावना, गहन चिंतन, सूक्ष्म पर्यवेक्षण की अद्भूत क्षमता, मानव मनोविज्ञान का गहन अध्ययन, देशकाल और समाज चित्रण की अपार और असाधारण प्रतिभा हैं ।

पिता की मृत्यु के कारण अपनी शिक्षा को त्यागकर उन्होंने अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ सँभाली । लेखन के प्रति रूचि होने से नौकरी में उनका मन नहीं लगता था । उनकी पत्नी ने लेखन कार्य में उन्हें पूर्ण सहयोग दिया । वे स्वभाव से विनोदी और जिंदादिल थे । रहन-सहन में सादगी और सुरूचि उन्हें भाँति थी । अनेक भाषओं का तथा साहित्य का अध्ययन उन्होंने किया है । उन्हें उनके साहित्यिक योगदान को देख कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं । वे मूलतः एक महान विचारक और चिंतक हैं । उनकी दृष्टि संतुलित और निरपेक्ष है । लगभग एक दर्जन से भी ज्यादा उपन्यासों की रचना करनेवाले नागर ने समसामायिकता के माध्यम से उस पीढ़ी के तनावों, संघर्षों और खिंचावों को उभारने का प्रयास किया हैं । उनके उपन्यासों के कथानक रोचकता प्रदान कर पाठकों को रसमग्न करते हैं और चिंतन के लिए भी क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं ।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात बंगाल कें अकाल की पृष्ठभूमि पर सन 1942 में पड़े दुर्भिक्ष पर 'महाकाल' यह उपन्यास लिखा है । 'सेठ बाँकेमल' हास्य-व्यंग्यपर आधारित सफल उपन्यास है । कुल मर्यादा और परम्पराओं को हास्य-व्यंग्य शैली में प्रस्तुत करना उपन्यास का लक्ष्य है । 'बूँद और समुद्र' में उपन्यासकार ने समुद्र रूपी समाज में बूँद रूपी व्यक्ति के अस्तित्व का प्रयत्न किया है । सामाजिक जीवन के अनेक बनते बिगडते चित्र और स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यक्तिवादी, चेतना को इस उपन्यास के पात्र व्यक्त करते है । 'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में नवाबों के अत्याचार, भोग-विलास, अंग्रेजों की कुटनीति इनके बीच पिसता हिंदु-मुस्लिम समाज का चित्रण किया है । 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में कुलवधु और नगरवधु के बीच संघर्ष दिखाकर एक वेश्या कभी कुललक्ष्मी नहीं बन सकती यह सिद्ध किया है । 'अमृत और विष' उपन्यास में केंद्रीय पात्र अरविंद शंकर के माध्यम से तत्कालीन घात-प्रतिघातों को

अभिव्यक्त किया है । स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर समाज की मनोवृत्तियाँ और विश्रृखंलितता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । 'सात घुँघटवाला मुखड़ा' उपन्यास में महलों में होनेवाली ऐय्याशी, काम-पिपासा, परस्पर अविश्वास, द्वेष, निरंतर होनेवाले पतन का चित्रण किया है । अंत में कहा गया है कि मनुष्य जब सभी तरफ से हारता है तो निराश होकर ईश्वर की प्रार्थना करता है । 'एकदा नैमिषारण्ये' उपन्यास प्राचीन भारत की धार्मिक एवं भावात्मक एकता का चित्रण करता है । 'वसुधैव कुटुंबकम्' का स्वर उसमें मुखर हुआ है । 'मानस का हंस' में तुलसी के व्यक्तित्व का समन्वयात्मक दृष्टिकोण पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया है । उनकी पत्नी रत्नावली ने तुलसी को उद्बोधन देकर भावी समाज के लिए अत्यंत मेधावी सुधारक प्रस्तुत किया है । 'नाच्यौ बहुत गोपाल' में समाज के सर्वथा उपेक्षित अछूतों में भी अछूत मेहतर वर्ग के जीवन की अंतरंग की झाँकी प्रस्तुत की है ।

'खंजन नयन' उपन्यास में सूरदास अंधे होते हुए भी अपने सुमधुर स्वर से भजन-कीर्तन कर अपने जीवन को कैसे आदर्शवत बनाते है इसका चित्रण है । 'बिखरे-तिनके' उपन्यास में देश में हो रही राजनैतिक अव्यवस्था, अनैतिक व्यवहार तथा भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है । 'अग्निगर्भा' उपन्यास में देश की सबसे बडी ज्वलंत समस्या दहेज के द्वारा नारी शोषण को स्पष्ट किया है ।

इस प्रकार नागर ने अपने उपन्यासों में अनेक सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित किया है । उसमें अनपढ़, कुसंस्कारों से युक्त भारतीय जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व हुआ है । इससे स्पष्ट है कि, नागर एक निर्भीक और स्वतंत्रचेता कलाकार थे । वे जनता के मन और मस्तिष्क दोनों को झकझोर देते है । इसलिए उनका कथा साहित्य प्रभावी तथा महत्त्वपूर्ण माना जाता है ।

# संदर्भ ग्रंथ सूची


1 डॉ. सुदेश बत्रा-अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.क्र. 5 ।
2 धर्मयुग - 13 मई, 1984 पृ.क्र. 38 ।
3 देवेंद्र चौबे - कथाकार अमृतलाल नागर पृ.क्र. 26 ।
4 डॉ. सुदेश बत्रा - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.क्र. 11 ।
5 अमृतलाल नागर - नाच्यौ बहुत गोपाल पृ.क्र. 25 ।
6 डॉ. सुदेश बत्रा - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.क्र. 8 ।
7 डॉ. पुष्पा बंसल - अमृतलाल नागर : भारतीय उपन्यासकार पृ.क्र. 23 ।
8 डॉ. सुदेश बत्रा - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.क्र. 15 ।
9 अमृतलाल नागर - महाकाल पृ.क्र. 30 ।
10 अमृतलाल नागर - महाकाल पृ.क्र. 68 ।
11 अमृतलाल नागर - महाकाल पृ.क्र. 96 ।
12 अमृतलाल नागर - महाकाल पृ.क्र. 96 ।
13 अमृतलाल नागर - महाकाल पृ.क्र. 227 ।
14 अमृतलाल नागर - सेठ बाँकेमल पृ.क्र. 110 ।
15 अमृतलाल नागर - सेठ बाँकेमल पृ.क्र. 82 ।
16 अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र पृ.क्र. 583 ।
17 अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र पृ.क्र. 12 ।
18 अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र पृ.क्र. 167 ।
19 अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र पृ.क्र. 97 ।
20 अमृतलाल नागर - शतरंज के मोहरे पृ.क्र. 121 ।
21 अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्र. 25 ।
22 अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ.क्र. 187 ।
23 अमृतलाल नागर - अमृत और विष पृ.क्र. 34 ।
24 अमृतलाल नागर - अमृत और विष पृ.क्र. 400 ।
25 अमृतलाल नागर - सात घुँघटवाला मुखड़ा पृ.क्र. 100 ।
26 अमृतलाल नागर - सात घुँघटवाला मुखड़ा पृ.क्र. 122 ।
27 अमृतलाल नागर - एकदा नैमिषारण्ये पृ.क्र. 352-353 ।
28 अमृतलाल नागर - एकदा नैमिषारण्ये पृ.क्र. 51 ।
29 अमृतलाल नागर - मानस का हंस पृ.क्र. 148 ।
30 अमृतलाल नागर - मानस का हंस पृ.क्र. 175 ।
31 अमृतलाल नागर - नाच्यौ बहुत गोपाल पृ.क्र. 64 ।
32 अमृतलाल नागर - नाच्यौ बहुत गोपाल पृ.क्र. 80 ।
33 अमृतलाल नागर - खंजन नयन पृ.क्र. 74 ।
34 अमृतलाल नागर - बिखरे तिनके पृ.क्र. 105 ।
35 अमृतलाल नागर - अग्निगर्भा पृ.क्र. 110 ।